वर्ष :: 33 अंक : 18
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: गुरुवार, 26 जनवरी, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

शुभकामना

'मिथिला वर्णन' परिवार की ओर से समस्त देशवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

सूचना

'मिथिला वर्णन' का आगामी अंक 29 जनवरी की जगह अब 05 जनवरी, 2023 को प्रकाशित होगा।
- संपादक

लूट की जमीन पर खड़ा वेदांता-इलेक्ट्रोस्टील

प्रशासनिक संरक्षण में कंपनी ने किया सैकड़ों एकड़ वनभूमि पर अवैध कब्जा, सीबीआई जांच से होगा बड़ा खुलासा

विजय कुमार झा

बोकारो : झारखंड में प्रशासनिक संरक्षण में वन भूमि की लूट किस तरह हो रही है, इसका जीता-जागता प्रमाण है बोकारो जिले के चंदनकियारी प्रखंड स्थित सियालजोरी में संचालित वेदांता-इलेक्ट्रो स्टील कारखाना, जिसकी बुनियाद ही सरकार द्वारा चिन्हित व अधिसूचित वन-भूमि पर खड़ी है। प्रशासनिक संरक्षण में इस कारखाने का निर्माण वन विभाग की 104 एकड़ चिन्हित एवं अधिसूचित (डिमार्केटेड एण्ड नोटिफायड) भूमि पर किया गया। इसके अलावा इस कम्पनी ने वन विभाग की लगभग 400 एकड़ जमीन पर अवैध रूप से कब्जा कर रखा है। लेकिन, आश्चर्य यह है कि वन विभाग के अधिकारी खून-पसीना बहाकर इस जमीन को बचाने की कोशिश करते रहे, संबंधित अधिकारियों को इस संबंध में लिखित प्रतिवेदन भेजते रहे, बावजूद इसके वे इसे बचाने में विफल रहे। जानकार बताते हैं कि अब इस कम्पनी द्वारा वन विभाग की उक्त जमीन को अपने शेष **(पेज- 7 पर)**

जब हाईकोर्ट में गिड़गिड़ाने लगी हेमंत सरकार

रांची : झारखंड में सरकारी अधिकारियों की मिलीभगत से वन भूमि की हो रही खुली लूट के एक मामले में सुनवाई करते हुए लगभग तीन माह पूर्व झारखंड हाईकोर्ट ने हेमंत सरकार की बखिया उधेड़ दी। नवम्बर 2022 के प्रथम सप्ताह में झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस डा रवि रंजन व जस्टिस एस एन प्रसाद की खंडपीठ में राज्य में वन भूमि पर अतिक्रमण करने को लेकर दाखिल जनहित याचिका पर सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान अदालत ने मौखिक टिप्पणी करते हुए कहा कि- 'ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकारियों ने मिलीभगत कर वन भूमि को बेच दी है। इसलिए मामले की जांच सीबीआई से कराई जाएगी।' सरकार ने जवाब देने का मौका मांगा। झारखंड सरकार की ओर से तीन सप्ताह का समय दिए जाने की मांग की जा रही थी, लेकिन अदालत ने कहा कि 'कोर्ट इतना समय नहीं दे सकती है।' सरकार के बार-बार आग्रह करने के बाद अदालत ने दो सप्ताह में जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। हालांकि, सरकार ने हाईकोर्ट में क्या जवाब दिया, इस बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं मिल सकी है। लेकिन, इतना तो तय है कि वन भूमि की लूट पर हाईकोर्ट भी राज्य सरकार से सख्त नाराज है। मालूम को कि इस संबंध में आनंद कुमार ने हाई कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की है। याचिका में कहा गया है कि राज्य के विभिन्न वन प्रमंडलों की पचास हजार हेक्टेयर वन भूमि पर अतिक्रमण किया गया है। कुछ जगहों पर अधिकारियों की मिलीभगत से वन भूमि बेच दी गई है।

वन संरक्षण एक्ट का खुला उल्लंघन

जानकार बताते हैं कि वन संरक्षण अधिनियम के तहत वन विभाग द्वारा चिन्हित एवं अधिसूचित भूमि पर किसी तरह का निर्माण आदि नहीं किया जा सकता है। यदि राज्य सरकार को भी किसी विशिष्ट परियोजना के लिए ऐसी जमीन की जरूरत होगी तो उसे वन भूमि के अपयोजन की अनुमति भारत सरकार से लेनी होगी। लेकिन, इस कम्पनी ने भारत सरकार के वन संरक्षण अधिनियम का खुला उल्लंघन किया है।

- संपादकीय -

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

आज हम अपने देश का 74वां गणतंत्र दिवस मना रहे हैं। यह दिवस इस बात का आकलन करने का सबसे अच्छा अवसर है कि देश ने क्या उपलब्धियां हासिल की हैं और अभी किन आकांक्षाओं को पूरा करना शेष है। एक गणतंत्र के रूप में हमारे देश ने स्वयं को किस तरह परिवर्तित किया है, इसे हमारे देश में निर्मित स्वदेशी सैन्य उपकरणों के प्रदर्शन से समझा जा सकता है। भारत आज जहां रक्षा सामग्रियों के निर्माण में न सिर्फ आत्मनिर्भर बन रहा है, बल्कि कई अन्य देशों में भी भारतीय सुरक्षा उपकरणों की मांग बढ़ी है। वहीं, स्वदेशी के साथ-साथ हमारे कदम आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। यह निःसंदेह बदलते भारत का एक जीता-जागता उदाहरण है। देश किस तेजी से बदल रहा है, इसके प्रमाण कई अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई दे रहे हैं। भारत डिजिटल तकनीक में एक बड़ी शक्ति बनने के साथ ही विश्व के समक्ष उदाहरण भी प्रस्तुत कर रहा है और इन सब के अतिरिक्त अनेक चुनौतियों तथा प्रतिकूल परिस्थितियों के बाद भी हमारी अर्थव्यवस्था तेज गति वाली बनी हुई है। आज हमारा देश एक ओर जहां आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, वहीं लोकतंत्र की जड़ें भी हमारे देश में काफी गहरी हो चुकी हैं। यही कारण है कि केन्द्र में पिछले कुछ कुछ वर्षों से स्थापित और स्थिर सरकार ने आत्मनिर्भरता के मिशन को पूरा करने की दिशा में अपना कदम आगे बढ़ा दिया है। भारत के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि दुनिया के लिए भारत का विकास और नए भारत की कहानी शोध का विषय बन गया है। आज विश्व में भारत को जानने और पहचानने की एक अभूतपूर्व जिज्ञासा है। एक ओर जहां हमारी वर्तमान की सफलताओं का आकलन किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर हमारे भविष्य को लेकर आशाएं भी प्रकट की जा रही हैं। विश्व समुदाय भी यह मानने लगा है कि उसकी अनेक समस्याओं का समाधान भारत के सहयोग से ही संभव हो सकता है। ऐसे में भारत की प्रतिष्ठा आगे और तब बढ़ेगी, जब देश के सभी नागरिक अपनी भूमिका का निर्वाह पूरी ईमानदारी से करेंगे और इस भूमिका का सरल तरीके से निर्वाह तभी हो सकता है, जब हम भारत के लोग अपने नागरिक दायित्वों के प्रति सजग रहें और उन चुनौतियों का मिलकर सामना करें, जो हमारे सामने मौजूद हैं। तभी हम गणतंत्र दिवस को सचमुच सही मायने में एक उत्सव के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

गणतंत्र दिवस : छुट्टी नहीं, संकल्पित होने का सुअवसर

26 जनवरी को हर साल हम भारतीय गणतंत्र दिवस बड़े जोर-शोर से मनाते हैं। राष्ट्रपति भवन के सामने इंडिया गेट या अब कर्तव्य पथ पर हम अपनी फौजी क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। यहां सवाल यह उठता है कि या गणतंत्र दिवस को मनाने का यही सर्वश्रेष्ठ तरीका है? गणतंत्र दिवस का यदि कोई दूसरा सरल नाम हम बोलना चाहें तो उसे संविधान प्रवर्तन दिवस भी कह सकते हैं। इसी दिन हमारा संविधान अब से 73 साल पहले लागू हुआ था। इसी दिन भारतीय गणतंत्र की शुरुआत हुई थी। इस दिन भारत की फौजी ताकत का प्रदर्शन या हमारे संविधान को कोई शक्ति प्रदान करता है? फौजी ताकत तो सोवियत संघ और सायवादी चीन के पास हम से भी कहीं ज्यादा रही है, लेकिन या हम उन्हें कभी गणतंत्र कहते थे? वे तो पार्टीतंत्र रहे हैं, नेतातंत्र रहे हैं,, तानाशाह राष्ट्र रहे हैं। हमने भी आजाद भारत में सोवियत संघ की नकल शुरू कर दी। वहां हिटलर और मुसोलिनी को पराजित करनेवाली सेना का हर साल प्रदर्शन किया जाता था। हमने भी वही शुरू कर दिया लेकिन उसके लिए दिन ऐसा चुन लिया जिसका गणतंत्र या लोकतंत्र से कुछ लेना-देना नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं कि भारत की सैन्य-शक्ति का प्रदर्शन अनुचित है लेकिन एक उत्तम गणतंत्र दिवस के दिन भारत की लोकशक्ति का स्मरण प्रदर्शन और संवर्धन करना ज्यादा जरूरी है।

26 जनवरी का दिन बस एक शासकीय दिन बनकर रह जाता है। लोग घर बैठकर छुट्टी मनाते हैं। इस दिन यदि देश और प्रदेश की सरकारें हमारे गणतंत्र को मजबूत और स्वस्थ बनाने के नए-नए संकल्प करें तो सचमुच हम अपना गणतंत्र दिवस सही अर्थों में मना सकते हैं। या हमने कभी सोचा कि भारत का राज-काज हम पूरी तरह से गणभाषा या लोकभाषा में चला पाए हैं? या हमने हमारी अदालतों की दुर्दशा पर इस दिन कोई विचार किया? चार करोड़ से ज्यादा मुकदमे दशकों से हमारी अदालतों में लटके पड़े हुए हैं। भारत में शिक्षा और चिकित्सा की तरह न्याय भी दुर्लभ है। हमारे अयोग्य भ्रष्ट और निकमे जन-प्रतिनिधियों को वापस बुला लेने की विधियां अभी तक क्यों नहीं बनी हैं? जनता निहत्थी होकर पांच साल तक इंतजार क्यों करे? आज तक भारत में एक भी सरकार ऐसी नहीं बनी है जिसे कुल वयस्कों के 50 प्रतिशत वोट भी मिल सके हों। कुल मतदाताओं में से 20-30 प्रतिशत लोगों के वोट से बनी सरकारें अपने आप को पूरे देश का प्रतिनिधि बताती हैं। हमारे राजनीतिक दल प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों में तदील हो चुके हैं। उनका आंतरिक गणतंत्र या लोकतंत्र एक मुहावरा बनकर रह गया है? सारे सांसदों विधायकों और सरकारी अफसरों की चल-अचल संपत्तियोंका ब्यौरा हर गणतंत्र दिवस पर सार्वजनिक क्यों नहीं किया जाता, ताकि भ्रष्टाचार पर थोड़ी-बहुत लगाम तो लगे। हमारा संविधान अभी तक कायम है। 100 से ऊपर संशोधनों के बावजूद यही हमारी बड़ी उपलधि जरूर है। इस सशक्त और अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हरेक देशवासी को संकल्पित होने की जरूरत है।

- प्रस्तुति : गंगेश

जीवन सूत्र पुनः दे भारत

भानु शशि-सा तेज मुख
आभा दीप्ति पुंज प्रचण्ड
कोयल कूक भँवर गुंजन
प्रमुदित कमल तड़ग बीच

खग मृग वृन्द स्वछंद विचरे
नभ पटल पर घना मेघ उमड़े
मोहक नृत्य मयूर समूह करै
मन थिरके अति आनन्द उठे।

चित चकोर मन मुग्ध भयो
सुषमा प्रकृति विलोक अलि
कुसुम सुगंध मकरन्द कली
हरित तृण पर ओस बूँद पड़ी

कल-कल छल-छल करतल
निनाद प्रति पल प्रवाहमान
निर्मल पावन उज्वल धवल
चिर शास्वत शीतल वारि गंग

प्रहरी उतुंग किरीट हिमालय
तपःस्थली ऋषि-मुनियों की
देव संस्कृति की भूमि भारत
चिरन्तन शाश्वत धर्म सनातन

चिर शांति विश्रान्ति धरा यह
अध्यात्म ज्ञान विज्ञान से पुष्ट
विश्व गुरु क्षत्रप समृद्ध भारत
मोक्ष जीवनसूत्र पुनः दे भारत।

- प्रो. अरुण श्रीवास्तव -

राष्ट्र निर्माण का अहम भागीदार बीएसएल

विजय कुमार झा

बोकारो : दामोदर के दक्षिण की ओर पहाड़ियों और सुदूर उत्तर की ओर पारसनाथ की पहाड़ियों से घिरा हुआ झारखंड के बोकारो जिला मुख्यालय में अवस्थित बोकारो स्टील प्लांट ऐसा एकीकृत इस्पात संयंत्र है, जो देश का पहला स्वदेशी इस्पात कारखाना है। यह सार्वजनिक क्षेत्र का चौथा इस्पात कारखाना है, जो राष्ट्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहा है। बोकारो इस्पात कारखाना, इसका निर्माण सोवियत संघ के सहयोग से 1965 में प्रारम्भ हुआ। आरम्भ में इसे 29 जनवरी, 1964 को एक लिमिटेड कम्पनी के तौर पर निगमित किया गया और बाद में सेल के साथ इसका विलय हुआ। पहले यह सेल की एक सहायक कम्पनी और बाद में सार्वजनिक क्षेत्र लोहा और इस्पात कम्पनियां (पुनर्गठन एवं विविध प्रावधान) अधिनियम 1978 के अंतर्गत एक यूनिट बनाई गई। कारखाने का निर्माण कार्य 6 अप्रैल, 1968 को प्रारम्भ हुआ।

देश का पहला स्वदेशी इस्पात कारखाना

यह कारखाना देश के पहले स्वदेशी इस्पात कारखाने के नाम से विख्यात है। इसमें अधिकतर उपकरण, साज-सामान तथा तकनीकी कौशल स्वदेशी ही हैं। कारखाने का 17 लाख टन इस्पात पिण्ड का प्रथम चरण 2 अक्टूबर, 1972 को पहली धमन भट्ठी चालू होने के साथ ही शुरू हुआ तथा निर्माण कार्य तीसरी धमन भट्ठी चालू होने पर 26 फरवरी, 1978 को

पूरा हो गया। 40 लाख टन चरण की सभी यूनिटें चालू हो चुकी हैं और 1990 के दशक में आधुनिकीकरण से कारखाने की क्षमता बढ़ाकर 45 लाख टन से अधिक तरल इस्पात की कर दी गई है। इसके स्टील मेल्टिंग शॉप-2 में जो नई सुविधाएं स्थापित की गईं, उनमें 2 ट्विन स्ट्रैण्ड स्लैब कास्टर और एक स्टील रिफाइनिंग यूनिट शामिल हैं। स्टील रिफाइनिंग यूनिट का उद्घाटन 19 सितम्बर, 1997 और कंटीन्यूअस कास्टिंग मशीन का उद्घाटन 25 अप्रैल, 1998 को किया गया। हॉट स्ट्रिप मिल के आधुनिकीकरण के साथ ही कारखाने में उच्च दाब वाले डी-स्केलर, वर्क रोल बैन्डिंग, हाइड्रोलिक ऑटोमेटिक गेज कन्ट्रोल, तुरन्त रोल परिवर्तन, लैमिनर कूलिंग आदि की सुविधा भी उपलब्ध हो गई है। नई वॉकिंग बीम, री-हीटिंग भट्ठियां पुरानी कम कुशल पुशर भट्ठियों का स्थान ले रही हैं। एक नया हाइड्रोलिक कॉयलर भी लगाया गया है तथा पहले से काम कर रहे दो कॉयलरों में सुधार किया गया है। हॉट स्ट्रिप मिल के आधुनिकीकरण के पूरा होने के साथ ही अब बोकारो इस्पात कारखाना बहुत अच्छी किस्म के हॉट रोल्ड उत्पाद तैयार कर रहा है तथा विश्व बाजार में उनकी अच्छी मांग है।

कड़ी चुनौतियों का किया सामना : कुछ साल पहले लोगों को लग रहा था कि मिनी इंडिया के नाम से प्रख्यात बोकारो का वजूद ही अब मिट जायेगा, लेकिन इसने विपरीत परिस्थितियों से लड़ते हुए न सिर्फ अपना अस्तित्व बचा लिया, बल्कि एक नया मुकाम भी हासिल कर लिया है। क्योंकि, बोकारो इस्पात कारखाने की सभी संगठनात्मक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु इसके लोग हैं। बोकारो इस्पात की कथा बोकारो में रहने वाले लोगों द्वारा छोटानागपुर के जंगलों में एक विशाल कारखाना स्थापित करने की गाथा है। यह कारखाना जो स्वच्छन्द युग की कड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए एक के बाद दूसरा मील का पत्थर पार कर गया है और आज अपने आविष्कारिक कार्यों से शीर्ष तक पहुंच गया है।

बोकारो इस्पात कारखाने का उद्देश्य भारत में विश्व श्रेणी के सपाट उत्पादों का एक केन्द्र बनकर सामने आना है। कारखाने की आधुनिकीकरण योजनाओं के अन्तर्गत कुछ नई रोलिंग तथा कोटिंग सुविधाओं के साथ इसकी तरल इस्पात उत्पादन क्षमता बढ़ायी गई है। इन नई सुविधाओं से कारखाना अत्यन्त उच्च श्रेणी के ऐसे उत्पाद तैयार कर उपभोगकताओं की मांग पर खरा उतरने के प्रयास में निरन्तर सक्रिय है। खासकर, बोकारो स्टील प्लांट के वर्तमान निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश के कार्यकाल में इसने उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। आज बोकारो ब्राण्ड का अर्थ विश्वस्त क्वालिटी और समय पर माल का प्रेषण करना और उपभोक्ताओं को संतुष्टि प्रदान करना है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान का सिपाही

बोकारो स्टील प्लांट आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत अभियान का एक सिपाही बनकर खड़ा है। बोकारो में हॉट रोल्ड कॉयल, हॉट रोल्ड प्लेट, हॉट रोल्ड शीट, कोल्ड रोल्ड कॉयल, कोल्ड रोल्ड शीट, टिन मिल ब्लैक प्लेट (टीएमबीपी) और गेल्वेनाइज्ड प्लेन तथा कोरुगेटेड (जीपी/जीसी) शीट जैसे सपाट तैयार किए जाते हैं। कारखाने ने मोटरगाड़ी, पाइप और ट्यूब, एलपीजी सिलेंडर, बैरल और ड्रम और विशेष रूप से आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत नये इस्पात ग्रेड का विकास तथा देश की सामरिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु आईएनएस विक्रान्त नौसेना की कई अहम परियोजनाओं के इस्पात का उत्पादन कर राष्ट्र और राज्य की प्रगति में इसने विशेष योगदान दिया है।

स्टील के साथ लोगों की जिंदगियां बना रही सेल : अमरेंदु

'हर किसी की जिंदगी से जुड़ा हुआ है सेल'। इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए सेल यानी भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड ने अपनी स्थापना के 50 साल पूरे कर लिए। इस्पात जगत से लेकर कई मायनों में भारत को फौलाद बनाने वाले सेल के स्थापना दिवस पर इस्पातनगरी बोकारो में ऐतिहासिक समारोह का आयोजन हुआ और हजारों-हजार लोग इस इतिहास का साक्षी बने। सेल की सबसे महत्वपूर्ण इकाई माने जानेवाले बोकारो इस्पात संयंत्र ने इसकी शानदार मेजबानी की। रंग-बिरंगी रोशनी की बरसात करते लेजर शो, मिथिला पुत्री जानी मानी कलाकर मैथिली ठाकुर के जोशीले गायन और गुदगुदाती रजत सूद की स्टैंड-अप कॉमेडी ने बोकारोवासियों को मंत्रमुग्ध कर दिया और शहर का पुस्तकालय मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से घण्टों गुंजायमान बना रहा। लेजर शो में गीत-संगीत के साथ बोकारो इस्पात संयंत्र की स्थापना से लेकर वर्तमान और भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम की शुरुआत विशेष रूप से आमंत्रित बीएसएल के भूतपूर्व प्रबंध निदेशक केएपी सिंह सहित बोकारो स्टील के वर्तमान निदेशक प्रभारी अमरेंदु प्रकाश, बोकारो डीसी कुलदीप चौधरी, एसपी चंदन झा एवं अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से केक काटकर की। अपने संबोधन में निदेशक प्रभारी अमरेंदु प्रकाश ने कहा कि सेल सही मायन में हर किसी की जिंदगी से जुड़ा है। सेफ्टी पिन से लेकर युद्धपोत के रन-वे और चंद्रयान के बेस में भी सेल का इस्पात लगा है। प्लांट में काम करनेवाले हरेक कर्मी ने अपने खून-पसीने और अपनी सूझ-बूझ से देश को बनाने का काम किया है। यह दिवस है उन सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने का। सेल न केवल स्टील, बल्कि लोगों की जिंदगियां और शहर बनाया है और इस इस्पातनगरी के लोग आज बोकारो का नाम विश्वपटल पर रोशन कर रहे हैं। स्थानीय कलाकारों में अगाथा सिंह व दिवस नायक ने भी गीत गाए।

स्कूली बच्चों को मुफ्त तकनीकी ज्ञान देगा 'खुशहाल बोकारो'

हुनर से खुशहाली

अटल-कलाम ड्रीम लैब का इनोवेशन प्रोग्राम शुरू

संवाददाता

बोकारो : बोकारो को कुछ न कुछ नया देने का सपना संजोये समाजसेवी अमरेन्द्र कुमार झा ने आसपास के मेधावी स्कूली बच्चों को मुफ्त में तकनीकी ज्ञान देने के उद्देश्य से अटल-कलाम ड्रीम लैब की स्थापना की है। खुशहाल बोकारो के बैनर तले अपने अभियान को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने मंगलवार को सैकड़ों स्कूली बच्चों को इससे जोड़ा, जहां देश के जाने-माने वैज्ञानिकों ने बच्चों को ड्रोन बनाने की विधियों से अवगत कराया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरु गोविन्द सिंह एजुकेशनल सोसायटी द्वारा संचालित कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एन्ड मैनेजमेंट के निदेशक डॉ प्रियदर्शी जरुहार तथा विशिष्ट अतिथि डीएवी पब्लिक स्कूल बोकारो के प्राचार्य एके झा, इमामुल हई खान लॉ एन्ड टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के निदेशक आर ए खान, आईआईटी मद्रास के प्रोफेसर डॉ ओम कुशवाहा एवं जनता ग्रुप कोलकाता के अभिषेक कुमार थे। इस दौरान डीएवी के प्राचार्य के झा ने कहा कि खुशहाल जिंदगी तभी होगी, जब हम ज्ञानवान होंगे। उन्होंने कहा कि अभी ड्रोन सर्वाधिक उपयोगी है। दुनिया में चीन के बाद भारत ही ऐसा देश है, जो सबसे ज्यादा ड्रोन का उत्पादन करता है। क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में भारत के लोगों की तुलना करने वाला और कोई नहीं है। उन्होंने कहा कि दिमाग भारत के पास है और अगर अमेरिका-ब्रिटेन से भारतीय वैज्ञानिक हट जाएं तो उनके पास कुछ भी नहीं बचेगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं, तकनीकी ज्ञान भी हो, इसके लिए जुनून होना चाहिए, ताकि भारत 2030 तक विश्व गुरु बन सके। गुरु गोविंद सिंह इंजीनियरिंग कॉलेज चास के प्राचार्य डॉक्टर जरूहार ने कहा कि वर्तमान समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस काफी महत्वपूर्ण है और खुशहाल बोकारो के माध्यम से जो काम अमरेंद्र कुमार झा ने प्रारंभ किया है, वह आजादी के दिनों में वीर कुंवर सिंह की लड़ाई की तरह ही मानी जाएगी।

अपने संबोधन में खुशहाल बोकारो के जनक अमरेंद्र कुमार झा ने कहा कि नई शिक्षा नीति जो भारत सरकार ने बनाई है और उसमें जो नई टेक्नोलॉजी आ रही है, उसे पकड़ना बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। सभी विद्यालयों में प्रयोगशाला हो, हर बच्चे के पास कंप्यूटर हो यह फिलहाल संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने इस क्षेत्र के मेधावी बच्चों के लिए बोकारो में तकनीकी ज्ञान का केंद्र स्थापित किया है,, ताकि उसका लाभ यहां के बच्चे लेकर विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की कर सकें।

प्रतियोगिताएं ज्ञान और कौशल को शानदार मंच प्रदान करती हैं : अग्रवाल

बोकारो : जरीडीह बाजार के छात्र मार्शल आर्ट्स चैम्पियनशिप जीतने पर मार्शल आर्ट्स बोर्ड ऑफ झारखण्ड के उपाध्यक्ष, शीतोरयु कराटे के झारखंड प्रदेश के उपाध्यक्ष एवं अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा समाज के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल के द्वारा मध्य विद्यालय जरीडीह में निशि कुमारी,खुशी कुमारी, शोभा कुमारी गुडिया, अंशिका कुमारी, समीर कुमार, देव नायडु को सम्मानित किया गया। मौके पर शीतोरयु कराटे के चीफ एवं मार्शल आर्ट्स बोर्ड के अध्यक्ष क्योशी उमेश नायडू, विद्यालय के प्रधानाध्यापक मनोज कुमार, विद्यालय के अध्यक्ष प्रदीप साव और शिक्षकगण व छात्र मौजूद थे। अपने संबोधन अनिल अग्रवाल ने कहा कि प्रतियोगिताएं ज्ञान और कौशल को प्रदर्शित करने के लिए एक शानदार मंच प्रदान करती हैं। प्रतिभा और उनकी दक्षता को संवारने निखारने के लिए समय-समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन होते रहना चाहिए तथा खासकर बच्चियों को आत्मरक्षा के लिए महत्वपूर्ण मार्शल आर्ट्स सीखना चाहिए।

आह्वान डीपीएस बोकारो के 'समागम' में बच्चों ने बिखेरी बहुरंगी छटा, सतलज सदन प्रथम

समृद्ध राष्ट्र-निर्माण में खेल जरूरी : डीसी

संवाददाता

बोकारो : डीपीएस बोकारो के 33वें वार्षिक खेलकूद समारोह 'समागम' का आयोजन जोशो-खरोश और उत्साहपूर्ण वातावरण में किया गया। समारोह में विद्यालय के सभी छह सदनों के छात्र-छात्राओं ने पूरे उमंग के साथ भाग लिया और विभिन्न स्पर्धाओं में जमकर अपनी प्रतिभा व अपने दमखम का परिचय दिया। एक मैदान में सैकड़ों प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का समागम और कलात्मक शैली में क्रीड़ात्मक स्पर्धाओं में उनकी भागीदारी विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। 'समृद्ध राष्ट्र-निर्माण का सम्मिलित प्रयास' थीम पर आधारित इस समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि जिले के उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने मशाल प्रज्वलित कर व गुब्बारे उड़ाकर किया।

अपने संबोधन में उपायुक्त श्री चौधरी ने बच्चों की प्रस्तुतियों को खूब सराहा। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक उत्कृष्टता के मामले में डीपीएस बोकारो की ख्याति तो सर्वविदित है, खेलकूद और कला के मामले में भी यहां के बच्चों की प्रतिभा काबिले-तारीफ है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद की उक्ति 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास है', की चर्चा करते हुए खेल की महत्ता बताई। अपने स्कूली-जीवन के अनुभव साझा करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में जिस प्रकार अंक हासिल करने का दबाव है, ऐसे में खेल व सांस्कृतिक गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी महत्वपूर्ण है। वस्तुतः, खेल बेहतर व्यक्तित्व में सहायक है और बेहतर नागरिकों से ही समृद्ध राष्ट्र-निर्माण का निर्माण संभव है।

प्राचार्य डॉ. गंगवार ने कहा कि खेल अनुशासन, मर्यादा, टीम भावना और आपसी तालमेल सिखाता है। खेल में हार-जीत से ज्यादा प्रतिभागिता महत्वपूर्ण है। इस क्रम में बच्चों ने मार्च पास्ट, ड्रिल, फील्ड डिस्प्ले व समूह नृत्य, योग आदि की मनोहारी प्रस्तुति से बहुरंगी छटा बिखेरी। सतलज हाउस 1139 अंकों के साथ विभिन्न स्पर्धाओं में ओवरऑल चैंपियन बना।

हफ्ते की हलचल

गणितज्ञ बीके सिंह ने किया विद्यार्थियों का मार्गदर्शन

बोकारो : गणित के क्षेत्र में देश की नामी-गिरामी हस्ती एवं अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड के संस्थापकों में से एक बीके सिंह ने डीपीएस चास के विद्यार्थियों का परीक्षा से पूर्व कुशल मार्गदर्शन किया। आगामी बोर्ड परीक्षाओं के मद्देनजर विद्यालय में एक विशेष सत्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सिंह ने परीक्षा में बच्चों को गणित की परीक्षा में शत-प्रतिशत सफलता के लिए महत्वपूर्ण टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि केवल एक ही तरह की किताबें पढ़ने से सफलता तो मिलती है, परंतु शत-प्रतिशत नहीं। इसके लिए बच्चों को एनसीईआरटी पुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों का स्वाध्याय करना चाहिए। एनसीईआरटी बुक्स के अलावा एनसीईआरटी एग्जाम्प्लर की मदद से स्वयं क्वेश्चन बैंक तैयार करना काफी कारगर साबित हो सकता है। विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने बोर्ड परीक्षाओं से पहले इस तरह के सत्र को काफी सराहनीय बताया और कहा कि विद्यालय समय-समय पर ख्याति प्राप्त विषय विशेषज्ञों को बुलाकर विद्यार्थियों के मार्गदर्शन और उनकी क्षमता के विकास को लेकर कटिबद्ध है। प्रभारी प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने बीके सिंह का विद्यालय में स्वागत किया और कहा कि श्री सिंह डीपीएस चास परिवार से विधिवत जुड़ गए हैं। वह लर्न ओ टेस्ट वर्ल्ड ओलंपियाड के चीफ मेंटर भी हैं।

केन्द्रीय विद्यालय में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

बोकारो : बोकारो इस्पात नगर के केन्द्रीय विद्यालय-1 में पराक्रम दिवस पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। अखिल भारतीय स्तर पर 500 केंद्रीय विद्यालयों में यह प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी, जिसमें कक्षा 9 से 12 तक के करीब 50000 छात्रों ने हिस्सा लिया। परीक्षा पे चर्चा 2023 के तत्वावधान में इस प्रतियोगिता की विषय वस्तु थी- प्रधानमंत्री द्वारा परीक्षार्थियों को दिए गए सफलता-मंत्र। इसमें बोकारो केंद्र में केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय सीबीएसई द्वारा पंजीकृत विद्यालय तथा राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों के करीब 100 छात्रों ने हिस्सा लिया। श्रेष्ठ 5 प्रतिभागियों को स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनी से संबंधित एनसीईआरटी की पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई। प्राचार्य ललित मोहन बिष्ट के अनुसार विजेता प्रतिभागियों में तमन्ना राय, कक्षा 11, डीपीएस बोकारो, सोनम कुमारी, कक्षा 10 के.वि. क्रमांक-1 बोकारो, रिया सिंह, कक्षा 11, ए.आर.एस पब्लिक स्कूल, तनुष्का कुमारी, कक्षा 9, चिन्मय विद्यालय, शिखा सिंह, कक्षा 11, डीपीएस बोकारो के नाम शामिल हैं। शेष प्रतिभागियों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लिखित 'परीक्षा वारियर्स' नामक किताब प्रदान की गई।

धर्म जागरण समिति ने मनाई नेताजी सुभाष की जयंती

बोकारो : धर्म जनजागरण समिति की ओर से सेक्टर-9 स्थित पटेल चौक, सामुदायिक भवन मैदान में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती उनके चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि कर मनाई गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता योगेंद्र कुमार चौधरी ने की व संचालन शिवानंद ने किया। जबकि, धन्यवाद ज्ञापन नरेश कुमार महतो ने किया। योगेन्द्र कुमार चौधरी ने कहा कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे। अपने अदम्य साहस और वीरता से देश के करोड़ों लोगों में स्वतंत्रता की अलख जगाई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजी के खिलाफ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज की स्थापना की। नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी के विचार आज भी लाखों लोगो को प्रेरणा देते हैं। उनके विचार को अपने जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में शामिल प्रमुख लोगों में योगेंद्र कुमार चौधरी, अमित कुमार गिरि, शिवानंद, कुलदीप महतो, सुजीत कुमार, नरेश महतो, गगन दास, श्रीकांत राय, डॉ एम हक, उमेश, नंदु, बीरेंद्र कुमार, अनमोल कुमार, मनीष कुमार, गणेश कुमार महतो, नरेश राम, सतीश कुमार मोनू, जयंत दत्ता सहित कई लोग मौजूद थे।

नागरिक मंच के प्रांतीय संयोजक बने बाल कृष्ण कुमार

बोकारो : नागरिक कल्याण मंच का एक दिवसीय मिलन समारोह सेक्टर 1सी मैदान में जितेंद्र कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में सभी विभागों के सेवानिवृत्त अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। मिलन कार्यक्रम में कई गणमान्य व्यक्तियों डॉक्टर पी एन पांडे, डॉ मिथिलेश कुमार विशेष रूप से उपस्थित हुए। सर्वप्रथम सभी सदस्यों के विचार विमर्श के पश्चात नागरिक कल्याण मंच का जिला स्तर पर गठन करने का निर्णय लिया गया। सर्वसम्मति से बाल कृष्ण कुमार प्रांतीय संयोजक बनाये गये। जबकि, जिला कमेटी में डॉक्टर पी एन पांडे संरक्षक एवं चार संरक्षक सदस्य बनाये गये। अध्यक्ष वाल्मीकि प्रसाद सिंह एवं चार उपाध्यक्ष, जिला मंत्री विजय कुमार महतो को निर्वाचित किया गया। चार संयुक्त मंत्री के अलावा कोषाध्यक्ष मिथिलेश कुमार एवं जयकुमार संगठन मंत्री बने।

गोरखधंधे पर गोरखधंधा... झारखंड सरकार के उत्पाद विभाग का कारनामा–

माल महाराज का, मिर्जा खेले होली!

उत्पाद विभाग के अधिकारी जब्त नकली शराब को बिचौलिए के जरिए बेच रहे

विभाग ने तीन साल में भारी मात्रा में शराब बनाने की सामग्री सहित स्प्रिट की थी जब्त, अब सब माल गायब

देवेंद्र शर्मा

रांची : झारखंड सरकार का उत्पाद विभाग अपने नियम विरुद्ध किये गए कार्यों से इतिहास लिख रहा है। विभाग के अधिकारी और कर्मचारी अपने ही विभाग के नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। विभाग के खास सूत्र ने बताया है कि उत्पाद विभाग रांची के अफसरों और कर्मियों ने ऐसा काला कारनामा किया है कि यदि इनकी निष्पक्षता से जांच करा दी जाए, तो मामले चौंकाने वाले सामने आ जायेगे।

सूत्र का कहना है कि उत्पाद विभाग के द्वारा समय-समय पर जो अवैध देशी और विदेशी शराब बनाने के अड्डे और कारखाने पर छापामारी अभियान चलाया जाता है, उसमें से जब्त शराब को विभाग के अधिकारी ही पुनः शराब माफिया के हाथों बेच रहे हैं। उत्पाद विभाग के अधिकारी जब्त माल, जिसमें तैयार फर्जी नकली शराब को अपने विभाग के दलाल बिचौलिए के माध्यम से बेच देते हैं। विभाग ने तीन-चार साल में भारी मात्रा में स्प्रिट जब्त की थी, जो ओरमांझी, बुढ़मू, खलारी, धारा आदि से लाई गई थी।

जब्त माल को पहले उत्पाद विभाग के कांके रोड क्षेत्रीय कार्यालय के माल गोदाम लाकर रखा गया। फिर इससे नकली शराब बनाने वाले के ही हाथों बेच दिया गया। हाल ही में बुढ़मू से दो टैंकर कच्ची स्प्रिट पकड़ी गई थी। उसे भी नकली शराब बनाने बालों के ही हाथों बेचने की बात सामने आयी है। सूत्र का कहना है कि रांची और आसपास समय-समय पर नकली विदेशी शराब फैक्टरी का उद्भेदन होता रहता है, जहां नामी-गिरामी कम्पनी की तैयार नकली शराब की बोतल जब्त करने की खबर आती रहती है। सूत्र की मानें तो विभाग के बिचौलिए के माध्यम से उसे भी बाजारों में खपा दिया जा रहा है। इस काम में यह ईमानदारी रहती है कि जो अधिकारी जिस माल को जब्त करता है, वही उसे बेचकर लाभ कमाता है। देशी शराब के पैकेट पिछले दिनों भारी मात्रा में बेचे गए।

शराब की तरह रिकॉर्ड भी नकली, अफसर मालामाल

सूत्र के मुताबिक जब्त की गई वस्तु और शराब का लेखाजोखा नकली डायरी में ही मेंटेन किया जाता है। इस अनियमितता से अधिकारी अच्छी खासी आय अर्जित कर रहे हैं। चार अधिकारी पर आय से अधिक धन अर्जित करने का मामला जांच से सामने आ सकता है। तीन अधिकारी ने रांची के रिहायशी क्षेत्र मे फ्लैट ले रखे हैं। अपने आय से अधिक धन अर्जन उन्होंने कैसे कर लिया, यह एक यक्ष प्रश्न है। सूत्र का कहना है की अवैध देशी और विदेशी शराब का उत्पादन करने और बेचने वाले शराब माफिया हफ्ता और माहवार नजराना बिना किसी रोक-टोक के भेंट चढ़ाते रहते हैं। यहां यह भी गौरतलब है कि जो अवैध शराब या सामग्री विभाग के द्वारा जब्त की जाती है, उनकी एक सूची तैयार करने का प्रावधान है। जो अवैध शराब जब्त की जाती है, उसे भी नष्ट किया जाता है, परन्तु झारखंड के किसी भी जिले में ऐसा नहीं किया जाता। देशी शराब जो पाउच वाले होती है, उसे भी शराब माफिया के हाथों बेचने की खबर है।

गाय और नदी के संरक्षण के लिए आगे आने की है जरूरत : शाही

संवाददाता

बोकारो : नगर विकास समिति, जन संघर्ष मोर्चा, दामोदर बचाओ अभियान, नागरिक कल्याण मंच एवं चास बोकारो ट्रक ऑनर वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वावधान में पर्यावरण संतुलन एवं सामाजिक सशक्तिकरण पर एक दिवसीय संगोष्ठी सेक्टर- 1 में संपन्न हुई। इसकी अध्यक्षता सुरेंद्र प्रसाद सिन्हा ने की एवं संचालन अभय कुमार मुन्ना तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ रतन केजरीवाल ने किया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि जगन्नाथ शाही ने कहा कि आज हम सबको माता, गाय और नदी के संरक्षण के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। श्री शाही ने कहा कि एक मां अपने बच्चे को जन्म देती है, उसी तरह दूसरी माता के रूप में गौ माता हमारा पालन पोषण करती है। साथ ही मां गंगा सहित सभी नदियां हमारे भरण पोषण एवं जीने के लिए अमृत स्वरूप जल उपलब्ध कराती हैं। यह तीनों सृष्टि के रचयिता हैं, किंतु दुर्भाग्य से इन तीनों का ही समाज में विभिन्न तरह से हरण किया जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप तरह तरह की विपदा प्रकट हो रही है।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए दामोदर बचाओ आंदोलन को प्रदेश पदाधिकारी धर्मेंद्र तिवारी ने कहा कि समाज के अंदर जल, वायु और भूमि के संरक्षण करने को लेकर जागरूकता चलाने की आवश्यकता है। प्रकृति के द्वारा प्रदत ये तीनों व्यवस्थाएं आज भयंकर प्रदूषण के दौर से गुजर रही हैं, जिसका दुष्प्रभाव हमें और हमारे आने वाली पीढ़ियों को भयंकर रूप से उठाना पड़ेगा। इस अवसर पर आयोजक संगठन के संरक्षक द्वारा अपने अपने संगठन का वार्षिक प्रतिवेदन एवं भविष्य में क्रियान्वित किए जाने वाली योजनाओं पर प्रकाश डाला गया।

संगोष्ठी को आयोजक संगठन के आशीष शीतल, प्रवीण सिंह, डॉक्टर प्रह्लाद वर्णवाल, विक्रम महतो, बाल कृष्ण कुमार, महेश ब्रह्मचारी, कौशल किशोर ने संबोधित किया। इस अवसर पर शिव कुमार सिंह, डॉ रतन केजरीवाल, श्रवण सिंह, टीनू सिंह, डॉक्टर पी एन पांडेय, अशोक जगनानी, गौरी शंकर सिंह, शिवकुमार श्रीवास्तव, राम भजन सिंह, विजय गुप्ता, बाल्मिकी सिंह, ललित प्रसाद सिन्हा, उमेश चंद्र शर्मा, मकसूदन मुर्मू, नंदकिशोर सिंह, परशुराम साव सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

स्वदेशी मेले में काव्य, गीत-संगीत सहित कई कार्यक्रमों की रही धूम

संवाददाता

बोकारो : बोकारो के मजदूर मैदान में स्वदेशी जागरण मंच की ओर से लगाए गए स्वदेशी स्वावलंबन मेले में एक तरफ जहां स्वदेशी उत्पादों के जरिए अपने देश के आर्थिक सशक्तीकरण का प्रयास किया गया, वहीं दूसरी ओर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए लोगों का मनोरंजन भी किया गया। इसी कड़ी में अखिल भारतीय साहित्य परिषद, बोकारो के तत्वावधान में स्वदेशी जागरण मंच के सौजन्य से स्वदेशी स्वावलंबन मेला, सेक्टर 4 में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि सचिंद्र कुमार बरियार के द्वारा भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि के बाद दीप प्रज्ज्वलित कर की गई। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, बोकारो की लब्ध-प्रतिष्ठित संस्था है। कार्यक्रम की अध्यक्षता बोकारो के वरिष्ठ कवि डॉ.परमेश्वर भारती ने तथा मंच संचालन लव कुमार, सत्यदेव तिवारी व गंगेश पाठक ने किया। कवि सम्मेलन में काव्य पाठ का आरंभ ब्रह्मानंद गोस्वामी के मंगलाचरण एवं सरस्वती वंदना से हुआ। गंगेश कुमार पाठक ने 'अभी सूरज ढला नहीं, जरा सी शाम होने दो, मै खुद लौट आऊंगा, जरा नाकाम होने दो' सुनाकर श्रोताओं की दाद पाई। कवि-गीतकार व गायक अरुण पाठक ने अपनी मैथिली रचना सद्भावना गीत- 'जाति धर्म के नाम पर नहि बांटू इंसान के...' सुनाकर भरपूर तालियां बटोरी।

नीता सहाय ने 'लाहौर में लहरायेगा तिरंगा', लव कुमार ने 'कैसे देश भक्ति आयेगी', ज्योति वर्मा ने 'सुनहरे ख्वाब', कस्तूरी सिंहा ने 'कहाँ सुरक्षित हैं, बेटियां', प्रेम कुमार ने 'इश्क लिखूं कि इंकलाब लिखूं', क्रांति श्रीवास्तव ने 'भारत को एक सुझाव नया चाहिए', रीना यादव ने 'मैं दुश्मन के माथे पर हिन्दुस्तान लिखती हूँ', गीता कुमारी ने 'तीन रंग का अपना तिरंगा बलिदान का प्रतीक है', ब्रजेश पांडेय ने 'अग्निपथ पर चलना है जिंदगी', अनिल कुमार श्रीवास्तव ने 'चक्रव्यूह', ' डॉ नरेन्द्र कुमार राय ने 'माई के आंचर बारी मत बांट भाई भाई', डॉ शशिकांत तिवारी ने 'सांझ', राजीव कंठ ने मैथिली कविता 'आम लोकक कपार', रंजना श्रीवास्तव ने 'भारत रंग लाएगा एक दिन,विश्व का दीपक बनकर चमकेगा एक दिन', डॉ सुबोध कुमार ने 'साथी', वकील दीक्षित ने भोजपुरी कविता, पीएल वर्णवाल ने हिन्दी कविता, डॉ परमेश्वर भारती ने 'मै नमन् करता हूँ उनका जो जवानी दे गये' सुनाकर सबकी वाहवाही ली। अंत मे धन्यवाद ज्ञापन सत्यदेव तिवारी ने किया। स्वदेशी जागरण मंच की ओर से सभी कवियों को डायरी व कलम भेंट कर सम्मानित किया गया।

समस्त देशवासियों को
26 JANUARY
गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
जो भरा नहीं है भावों से
जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
9199534444
ankit.nikumbh.9
@ankitks44
अंकित सिंह

जय हिंद, जय हिंद की सेना
समस्त देशवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!
राकेश मिश्रा
पूर्व प्रांतीय सचिव
अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद झारखंड।

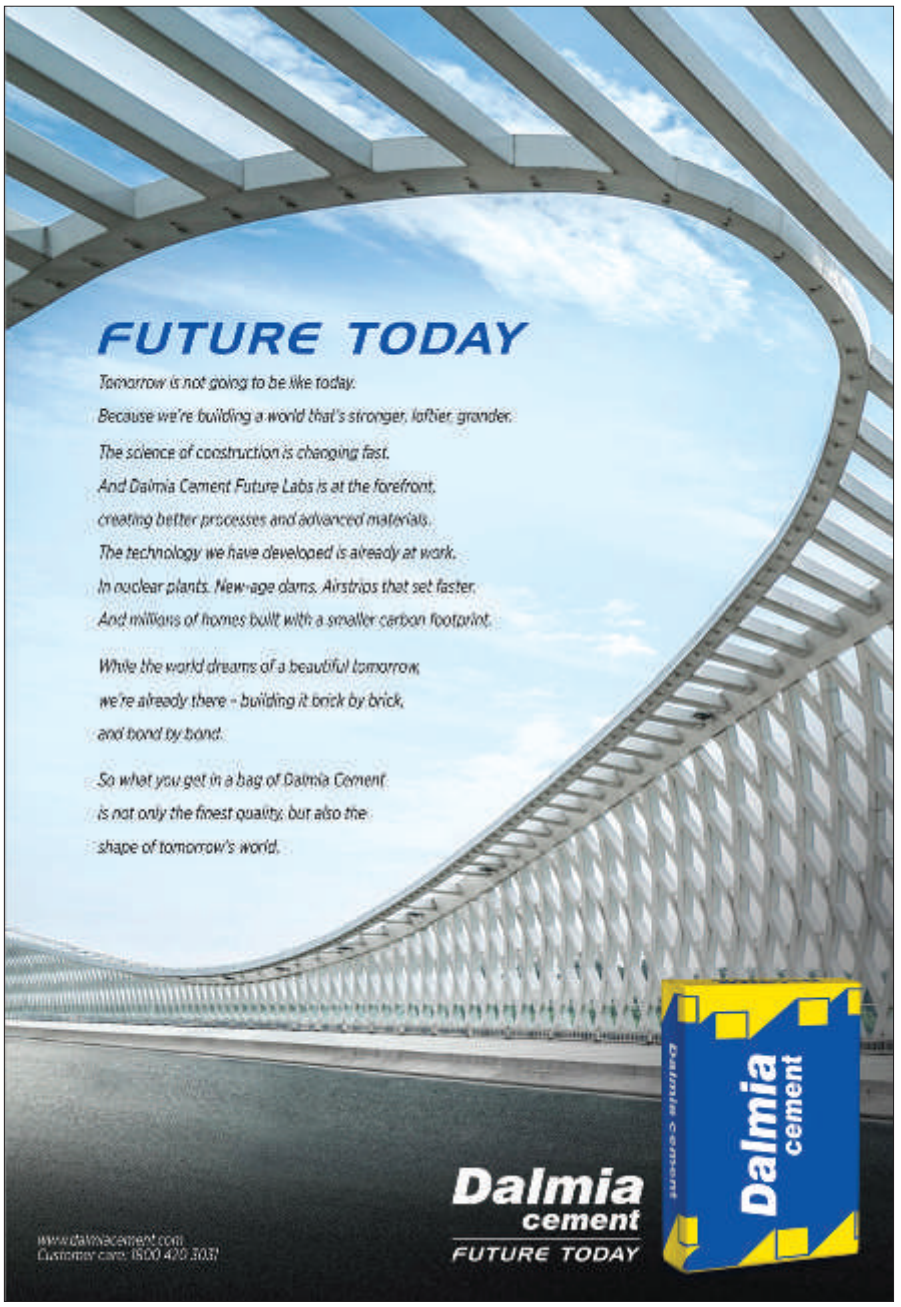
FUTURE TODAY
Tomorrow is not going to be like today.
Because we're building a world that's stronger, lighter, grander.
The science of construction is changing fast.
And Dalmia Cement Future Labs is at the forefront,
creating better processes and advanced materials.
The technology we have developed is already at work,
In nuclear plants. New-age dams. Airstrips that set faster.
And millions of homes built with a smaller carbon footprint.
While the world dreams of a beautiful tomorrow,
we're already there - building it brick by brick,
and bond by bond.
So what you get in a bag of Dalmia Cement
is not only the finest quality, but also the
shape of tomorrow's world.
Dalmia cement
FUTURE TODAY
Dalmia cement

ओएनजीसी
ONGC
G20
भारत 2023 INDIA
आज़ादी का अमृत महोत्सव
74वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ
ऊर्जा आत्मनिर्भरता
26 जनवरी, 2023 | बोकारो
1.4 Billion People
1 Dream.
IEW
INDIA ENERGY WEEK 2023
Growth. Collaboration. Transition.

बिहार की राजनीति में मची खलबली

राजद-जदयू नेताओं में बयानबाजी की होड़

विशेष संवाददाता

पटना : बिहार में सत्तारूढ़ महागठबंधन के नेताओं में इन दिनों सुर्खियां बटोरने की होड़ लगी है। हाल के दिनों में राजद और जदयू नेताओं की बयानबाजी ने बिहार की राजनीति में खलबली मचा दी है। जबकि, भाजपा स्वाभाविक रूप से इसका लाभ लेने की फिराक में है। लिहाजा, सात राजनीतिक दलों के महागठबंधन की यह गलती उन्हीं पर भारी पड़ती दिख रही है। क्योंकि भाजपा चाहती है कि महागठबंधन नेताओं की बयानबाजी जारी रहे और उसका फायदा आने वाले दिनों में उठाया जा सके।

मालूम हो कि राजद के विधायक व नेता अपने पार्टी नेतृत्व को होने वाली परेशानी की बगैर परवाह किये बेलगाम होकर अनाप-शनाप बयान दिये जा रहे हैं। राजद के ऐसे नेताओं की सूची में सुधाकर सिंह से लेकर शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर यादव, सुरेंद्र यादव और आलोक मेहता तक के नाम शामिल हो चुके हैं। उधर, जदयू में भी उपेंद्र कुशवाहा ने तो राजद के खिलाफ मोर्चा पहले ही खोल दिया था, अब उन्होंने जदयू के कई कद्दावर नेताओं का भाजपा से सम्पर्क होने का बयान देकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भी असहज कर दिया है। महागठबंधन के इन दो बड़े घटक दलों, राजद और जदयू के नेताओं की बयानबाजी क्या रंग लाएगी, यह तो आने वाला वक्त ही बतायेगा। लेकिन इतना साफ नजर आने लगा है कि महागठबंधन में सब कुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा।

कुशवाहा ने जदयू में किया विस्फोट

दरअसल, दिल्ली एम्स में अपनी जांच के लिए उपेंद्र कुशवाहा और भाजपा के कुछ नेताओं के बीच हुई मुलाकात से बिहार में बवाल मच गया। इसे भाजपा के साथ कुशवाहा की बढ़ती नजदीकी के रूप में देखा गया। जदयू से आहत कुशवाहा ने तो यहां तक कह दिया कि उनके दल के नेताओं ने जीते जी उनका पोस्टमार्टम कर दिया। कुशवाहा इस कदर आक्रोशित थे कि उन्होंने जदयू के शीर्ष नेताओं का भाजपा से सम्पर्क होने का खुलासा कर दिया। इससे पहले नीतीश कुमार ने उपेंद्र कुशवाहा के भाजपा के संपर्क में होने के सवाल पर कहा था कि- वे तो आते-जाते ही रहते हैं। कई बार आये और गये। कुशवाहा नीतीश के इस बात से काफी दुखी हुए और पटना लौटते ही उन्होंने विस्फोट कर दिया। उसके बाद से ही नीतीश और उनकी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष यह सफाई देने में लगे हैं कि कुशवाहा को यह बताना चाहिए कि जदयू के कौन-कौन नेता भाजपा के सम्पर्क में हैं। अब जदयू के भीतरखाने में क्या चल रहा है, यह तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उनके निकटतम सहयोगी ही बेहतर जानते होंगे, लेकिन कुशवाहा ने बिहार के महागठबंधन की राजनीति में संदेह के बीज तो बो ही दिये हैं। जबकि, उपेंद्र कुशवाहा के विस्फोटक बयान से आहत जदयू ने उनसे किनारा करने की कवायद शुरू कर दी है। पार्टी ने उनके कार्यक्रमों पर रोक लगा दी गयी है। यह कुशवाहा को जदयू से बाहर का रास्ता दिखाने के लिए शुरूआती संकेत माना जा रहा है। जबकि, कुशवाहा के तेवर से यही लगता है कि उन्होंने खुद को जदयू से किनारा करने के लिए कमर कस ली है।

इधर, सामाजिक खाई खोदने में लगे राजद नेता

उधर, राजद के नेता जदयू की विचारधारा के विपरीत लगातार बयानबाजी कर रहे हैं। इसके कारण जदयू के समक्ष संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। दरअसल, रामचरित मानस को लेकर राजद नेता व शिक्षा मंत्री चन्द्रशेखर ने जो बयान दिये, उसे लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और जदयू अध्यक्ष ललन सिंह के साथ-साथ पार्टी ने भी अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। जदयू का कहना है कि वह किसी भी धर्म पर टिप्पणी के खिलाफ है। रामचरित मानस पर टिप्पणी करने वाले शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर को अपना बयान वापस ले लेना चाहिए। इसके बावजूद चंद्रशेखर की अकड़ बरकरार है ही, उल्टे राजद के दो नेताओं के बेढंगे बोल सामने आ गये। सुरेंद्र यादव ने कह दिया कि भाजपा आने वाले लोकसभा चुनाव में फायदा लेने के लिए सेना पर हमले कराती है। इससे एक कदम और आगे बढ़कर आलोक मेहता ने 10 फीसद आरक्षण वालों को शोषक और मंदिर में घंटा बजाने वाला कहकर सवर्णों-गैर सवर्णों के बीच खाई खोद दी है। राजद नेताओं की इस बयानबाजी से यह संकेत मिलने लगे हैं कि हिन्दू धर्मग्रंथों के विरोध से हिन्दू वोटर एकजुट होंगे। साथ ही, सवर्णों के खिलाफ राजद नेता के बयान से सवर्ण वोटर भाजपा की ओर गोलबंद होंगे।

भाजपा को बैठे बिठाये मिला बड़ा मुद्दा

महागठबंधन में मची इस खींचतान और इसके नेताओं के बेढंगे बोल से भाजपा के नेता गदगद हैं। उन्हें बिना पसीना बहाये महागठबंधन के खिलाफ बड़ा मुद्दा मिल गया है और यह काम आसान कर दिया है महागठबंधन के नेताओं ने। भाजपा सबका साथ, सबका विकास के नारे और हिन्दुत्व के अपने पुराने एजेन्डे के साथ चुनाव मैदान में होगी।

रामबाबू नीरव के कथा-साहित्य पर हो शोध : डॉ. उमेश

पुपरी : शोध, अध्यापन और सृजन के अनुभवी रहे युवा साहित्यकार डॉ. उमेश कुमार शर्मा ने हिन्दी के चर्चित कथाकार रामबाबू नीरव से (पुपरी, सीतामढ़ी में निवास) मुलाकात की और इस दौरान कई विषयों पर गंभीर चर्चा की। मुलाकात के पश्चात पत्रकारों से संवाद करते हुए डॉ. शर्मा ने कहा कि 'नीरव जी हिन्दी के ऐसे साहित्यकार हैं, जो उत्कृष्ट सृजन के बावजूद गुमनाम रह गये। नीरव जी की अबतक लगभग सोलह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सृजनात्मक स्तर पर वे नागार्जुन और रेणु जी के समकक्ष हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर बिहार के बाहर हरियाणा तथा मध्यप्रदेश के कई विश्वविद्यालयों में शोध-कार्य किये जा रहे हैं, लेकिन बिहार में न तो उनपर शोध कार्य हो रहे हैं और न ही हिन्दी पाठक उन्हें पहचानते हैं। इसका एक ही कारण है कि वे किसी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नहीं हैं। विधिवत रूप से मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी कर चुके रामबाबू नीरव जी की शिक्षा जगत में कोई पहचान नहीं है। विडंबना है कि शिक्षा-जगत से जुड़ाव रखने वाले विद्वतजन उन्हें डिग्रियों के निष्कर्ष पर मूल्यांकित करते हैं, जबकि प्रतिभा किसी डिग्री के मोहताज नहीं है।' आगे उन्होंने कहा कि यहां के शोधार्थियों को उनके कथा-साहित्य पर शोध करना चाहिए। उनके सृजन में शोध की अनंत संभावनाएं हैं।

उनसे मुलाकात के बाद युवा गीतकार और हिन्दी शिक्षक डॉ. चंदीर पासवान ने कहा कि रामबाबू नीरव 21वीं सदी के प्रेमचंद हैं। उनकी कहानियां भारतीय समाज की जीवंत अभिव्यक्ति है। उनके कथा-साहित्य का कथ्य विराट है, जिन्हें पढ़कर युवाओं की जिन्दगी बदल सकती है। उनकी कथा-भाषा सृजनात्मक और उद्दात है। उनके सृजन में पाठकों को सम्मोहित करने का अद्भुत सामर्थ्य है। उन्होंने कहा कि मेरी भी जिन्दगी को बदलने में उनकी एक कहानी 'जीवा दास का आतंक' की गंभीर भूमिका है। अगर मैंने समय से उनकी यह कहानी न पढ़ी होती तो शायद आज शिक्षक होने के बजाय एक झोला छाप नेता होता। ज्ञात हो कि डॉ. उमेश कुमार शर्मा और डॉ. चंदीर पासवान उनके पुपरी (सीतामढ़ी) स्थित आवास पर शिष्टाचार मुलाकात के निमित्त उपस्थित हुए थे। इस दौरान आह्लादित होकर कथाकार नीरव ने उन्हें अपनी कई पुस्तकें भेंट की।

मिथिला डायरी

74वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

चित्रा टी हाउस
Garden Fresh Tea
दार्जिलिंग चायपत्ती के थौक एवं खुदरा विक्रेता
सिमरी (मधुबनी) 847222
प्रो.- कमलेन्द्र मिश्र (राजा) मो.-8873407301

पुराने व जटिल रोगों से हैं परेशान?
होमियोपैथ से निजात पाने के लिये संपर्क करें-
प्रो. डॉ. काशीश्वर किशोर DHMS (Distinction), B.H.M.S (BU).
प्रो. भूपेन्द्र नारायण मंडल होमियोपेथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, सहरसा
पूर्व सदस्य- होमियोपैथिक मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
बैठने का स्थान : शॉपिंग सेन्टर, शॉप नं. 58, पहला तल्ला, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, बीएस सिटी
(प्रातः 9.30- दोपहर 12.15 एवं संध्या 5.30-6.30)
जर्मन होमियो प्वाइंट, एफ/9, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बीएस सिटी
(सोमवार से शनिवार: संध्या 7.00-8.30), रविवार (संध्या 5.00-8.30)
Mob.- 9431162319 (Consultation after appointment only).

पेज- एक का शेष

लूट की जमीन पर...

नाम हस्तांतरित करवाने के प्रयास जारी हैं। अगर इस पूरे मामले की सीबीआई जांच करायी जाय तो बड़े घोटाले का न सिर्फ पदार्फाश होगा, बल्कि अरबों रुपये मूल्य की सरकारी सम्पत्ति को लूटने व लुटवाने वाले लोग बेनकाब होकर कानून के शिकंजे में होंगे।

दरअसल, कम्पनी ने सैकड़ों की संख्या में चीनी नागरिकता वाले कारीगरों, इंजीनियरों व तकनीशियनों की मदद से और भारी-भारी मशीनों का उपयोग कर महज घंटों में वन भूमि की प्रकृति ही बदल दी। यह काम वर्ष 2008-09 में हुआ, जब इलेक्ट्रो स्टील कम्पनी के पास इस कारखाने का सम्पूर्ण स्वामित्व था। परन्तु बाद के दिनों में परिस्थितिवश इलेक्ट्रो स्टील ने इसे वेदांता ग्रुप के हाथों इसे बेच दिया और आनन-फानन में वेदांता ग्रुप ने इसे खरीदकर इसका नाम वेदांता-इलेक्ट्रो स्टील कर दिया।

कंपनी प्रतिनिधि का कोई जवाब नहीं

वेदांता-इलेक्ट्रोस्टील कारखाना के अवैध वनभूमि पर खड़ा होने को लेकर अब कंपनी के अफसर भी कुछ बोलने को शायद तैयार नहीं। मामले में अद्यतन जानकारी और कंपनी का पक्ष जानने के लिए जब वेदांता-इलेक्ट्रोस्टील की निगमित संचार अधिकारी तान्या गुप्ता से उनके मोबाइल पर संपर्क करने का प्रयास किया गया, तो उन्होंने फोन का उत्तर नहीं दिया।

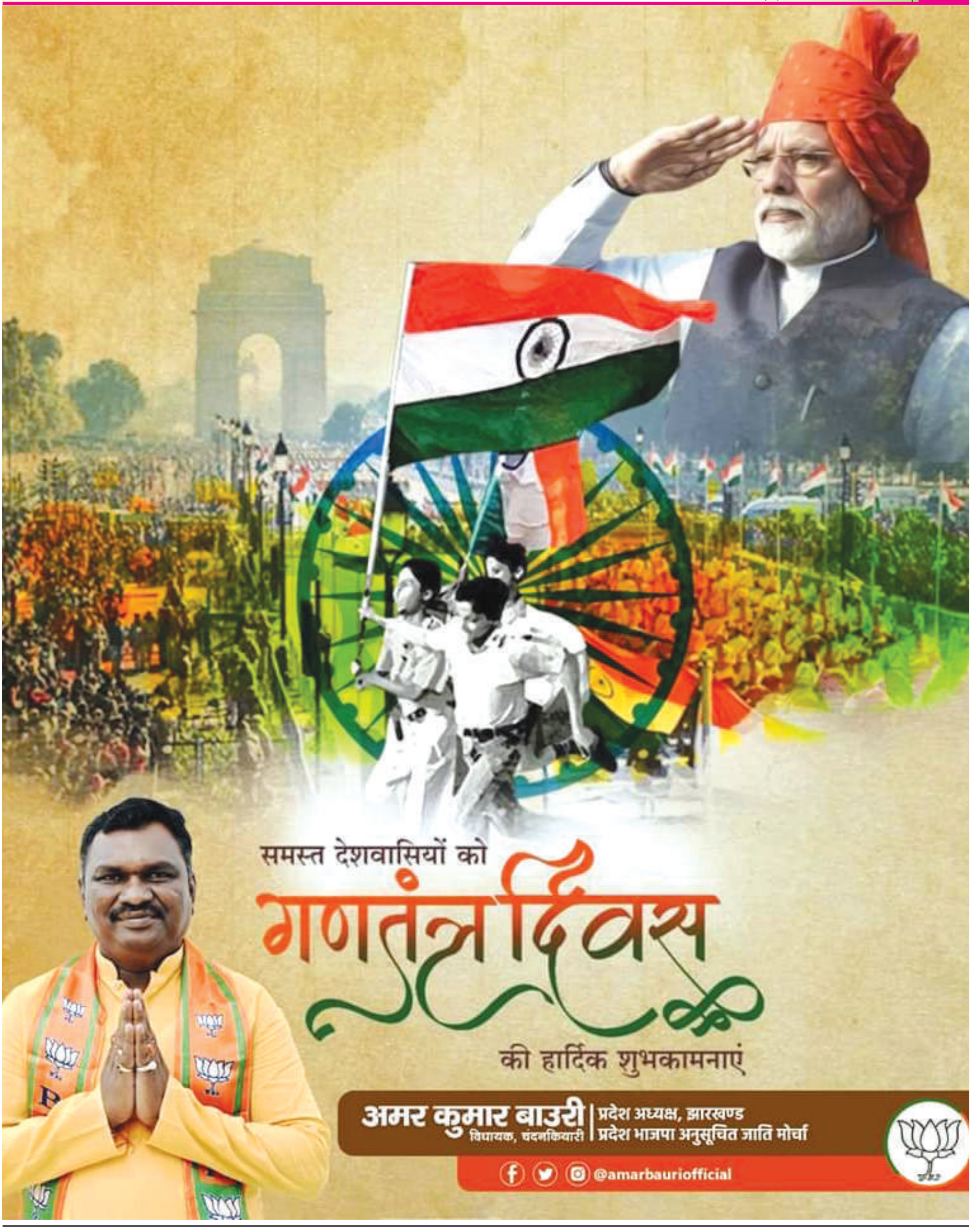
समस्त देशवासियों को
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
अमर कुमार बाउरी
विधायक, चंदनकियारी
प्रदेश अध्यक्ष, झारखण्ड
प्रदेश भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा
@amarbauriofficial

बेरमो, झारखंड सहित सभी देशवासियों को
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

अनिल अग्रवाल
प्रदेश अध्यक्ष
अग्रवाल कल्याण महासभा, झारखंड।

समस्त देशवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक
शुभकामनायें।

सरदार संतोष सिंह
महासचिव
झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी
(अल्पसंख्यक विभाग)

गणतंत्र दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!

डॉ. सी. के. ठाकुर
प्राचार्य
सोहनलाल आर्य महाविद्यालय, जैनामोड़ (बोकारो)

कार्यालय जिला परिषद, बोकारो
(शुभकामना संदेश)

26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) 2023 के शुभ अवसर पर अध्यक्ष/उप विकास आयुक्त-सह-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी एवं जिला परिषद, बोकारो परिवार की ओर से राज्य एवं देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

कीर्ति श्री जी.
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी,
जिला परिषद, बोकारो।

सुनीता देवी
अध्यक्ष
जिला परिषद, बोकारो।

देशवासियों को
गणतंत्र दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!

संदीप अनुराग टोपनो
अंचलाधिकारी, गोमिया।

देशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!

बसंत कुमार साहू
परियोजना पदाधिकारी, कथारा।

समस्त झारखंडवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनायें।

बी. एल. पासवान
प्रदेश अध्यक्ष (पुलिस यूनिट)
ऑल इंडिया एससी-एसटी ओबीसी
माइनॉरिटी को-ऑर्डिनेशन
काउंसिल (झारखंड)।

समस्त देशवासियों को
74वें गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

अभिषेक महतो
आईईएल थाना प्रभारी,
गोमिया

समस्त देशवासियों को
74वें गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

मुमताज आलम
झामुमो वरीय नेता
गोमिया
जिला- बोकारो।

आजसू पार्टी
समस्त प्रदेशवासियों को
गणतंत्र दिवस
की ढ़ेरों शुभकामनाएं एवं जोहार

www.lambodarmahto.com LMahtoGomia LMahtoGomia
डॉ लम्बोदर महतो
विधायक, गोमिया

सफल गृहस्थ जीवन के सूत्र

जिसे गृहस्थी में संतोष नहीं मिला, जिसकी साधना गृहस्थाश्रम में सिद्ध नहीं हुई, उसे वानप्रस्थ ने भी सिद्धि नहीं मिलेगी। गृहस्थी कठिन है, द्वैत का कीड़ा क्षेत्र है- प्राप्ति अप्राप्ति के बीच चल रहा निरंतर संघर्ष गृहस्थ को असंतोष की राह पर भेज देता है। भोग से मोक्ष सिर्फ गृहस्थी में मिलता है। आनंद पूर्वक आनंद आश्रम में रहें, आनंद का पर्याय गृहस्थ है।

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

सफल गृहस्थी में पति-पत्नी के मध्य सामंजस्य होना चाहिए, परंतु विडंबना है कि गृहस्थी में पति-पत्नी हमेशा एक-दूसरे से कहते हैं कि- 'सुनती हो' या 'सुन रहे हो', परंतु गृहस्थी में कोई सुन नहीं रहा होता। अगर सुन रहा हो तो दांपत्य में इतना कहने-सुनने की आवश्यकता नहीं होती।

कहने को पति-पत्नी दो शरीर, एक आत्मा माने जाते हैं। परंतु विवाह में कई बार पति-पत्नी रेलगाड़ी की दो समानांतर पटरी की तरह बन जाते हैं, जहां कोई दूसरे की बात सुनता नहीं है, सिर्फ अपनी कहते हैं।

आखिर गृहस्थी का आधार कौन है और स्तंभ कौन है? गृहपति को यह सुनकर विचित्र लगे, परंतु सत्य है कि गृहस्थी का आधार पत्नी है। वह घर वाली है, बिना घरनी के घर भूत का डेरा कहलाता है। दूसरों की क्यों कहें, स्वयं भूतों के नाथ महादेव भी बिना पार्वती के शंकर (कल्याण कर्ता) नहीं कहलाते हैं। गृहस्थी में स्त्री का योगदान एवं उसकी भूमिका दोनों पुरुष की अपेक्षा अधिक होती है। इसलिए जिस घर में पत्नी का सम्मान नहीं, वहां देवता भी रूठ जाते हैं।

वेद वाक्य है कि-

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता

देवता को यहां पर मात्र ईश्वरीय विभूतियां नहीं समझना है, बल्कि देवता का अर्थ है- हर वह व्यक्ति, जो देने में आनंद पाता है। देने में आनंदानुभूति करना देवत्व है। इस आनंद धारा का अनुभव करने के लिए शक्ति की अनुकंपा चाहिए। शक्ति का रूप नारी है।

पत्नी का पति के मनोनुकूल व्यवहार करना एवं पति का पत्नी की ज्ञात एवं अज्ञात इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करना सफल गृहस्थी के लिए अनिवार्य है, लेकिन इस मार्ग में अड़चन क्या है?

सबसे बड़ी अड़चन अहंकार है। यह गृहस्थी के आधार को दीमक की तरह खोखला कर देता है। दूर क्यों जाया जाए? भगवान शिव की अर्धांगिनी सती जब शिव की अवज्ञा करके श्री राम की परीक्षा लेने गई या फिर दक्ष के यज्ञ में सम्मिलित हुई तो उसका परिणाम कल्याणकारी नहीं रहा।

गृहस्थी की सफलता हेतु अत्यावश्यक है पति-पत्नी को एक-दूसरे को यथोचित सम्मान देना, एक-दूसरे के घर-परिवार को आदर देना, संतान के लालन-पालन में सहयोग देना, गृह कार्य में सहभागिता, जितनी चादर उतना पैर फैलाने में विश्वास और व्यर्थ की चमक-दमक से परहेज करना।

इन छह मापदंडों का पालन शिव-शक्ति के संयोग की तरह आपके दांपत्य को भी सुगम, सफल और सुदृढ़ बना सकते हैं। शिव-शक्ति जब एकाकार हो जाते हैं, शक्ति स्वयं शिव को सब देने के लिए तत्पर होती हैं। वह उनकी अनुगामिनी बन जाती हैं। शक्ति साधना में साधक देवी से अपनी इच्छा प्रकट करता है-

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्
तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य
कुलोद्भवाम्।

हे देवी! मुझे ऐसी पत्नी प्रदान कीजिए, जो मेरे अनुसार चले। ऐसी पत्नी प्राप्त हो जाए तो मैं संसार से तर जाऊंगा। मेरा कुल श्रेष्ठता की ओर बढ़ जाएगा। सबसे जरूरी बात यह जानना है कि गृहस्थी में कुछ भी स्थाई नहीं होता है। पति-पत्नी का समीकरण परिवर्तनशील है। इसीलिए खटपट, मनमुटाव, मतभेद को अस्थाई नहीं समझें और हमेशा इनके परे देखने की कोशिश करें। पति-पत्नी गृहस्थी की मूल इकाई हैं। बच्चे, सगे-संबंधी सब इसके इर्द-गिर्द हैं, पर केंद्र में हमेशा पति-पत्नी होते हैं।

पत्नी के बिना पति अधूरा है और पति के बिना पत्नी। इसलिए दोनों में यह समझ आवश्यक है कि आपसी तालमेल और सामंजस्य के साथ गृहस्थी की गाड़ी चलाएं। जिन घरों में सामंजस्य का अभाव आता है, वहां सुख, श्री, धन, संतोष सब मुंह फेर लेते हैं, क्योंकि वहां से सुमति रूठ जाती है। गृहस्थी का गृह प्रधान तत्व है। अतः गृहस्थ का धर्म है कि गृह पालन हेतु क्रियाशील रहे। वास्तव में अर्थ, कामनाएं, क्रियायोग सभी गृहस्थी में फलते-फूलते हैं। वनवासियों को क्या है? 'ना ऊधो से लेना न माधो को देना'। परंतु गृहस्थ को इसी समाज में रहना है।

इसलिए जिसे गृहस्थी में संतोष नहीं मिला, जिसकी साधना गृहस्थाश्रम में सिद्ध नहीं हुई, उसे वानप्रस्थ में भी सिद्धि नहीं मिलेगी। गृहस्थी कठिन है, द्वैत का क्रीड़ाक्षेत्र है- प्राप्ति अप्राप्ति के बीच चल रहा निरंतर संघर्ष गृहस्थ को संतोष की राह पर भेज देता है। भोग से मोक्ष सिर्फ गृहस्थी में ही मिलता है। आनंदपूर्वक आनंदाश्रम में रहें, आनंद का पर्याय गृहस्थ है।

हिन्दू धर्म में विवाह को संस्कार माना गया है। अर्थात पति एवं पत्नी में आत्मिक रूप से सामंजस्य हो, तभी विवाह सुदृढ़ एवं सफल हो सकता है। संस्कारित दंपत्ति जीवन में सुख-सौभाग्य, होनहार संतान, यश, सम्मान, वैभव, सुख, सुविधा, धर्म, साधुसेवा, दान आदि सुकृत्यों को प्राप्त करते हैं।

इसके विपरीत यदि यह संयोग ठीक नहीं बैठा तो गृहस्थ जीवन विषमय, कष्टकारी बन जाता है। वर्तमान में गृहस्थ जीवन में ऐसी स्थितियां बहुत अधिक हो रही हैं। इसका एक महत्वपूर्ण कारण संस्कारों का अभाव है, जिससे वे एक-दूसरे को भली-भांति समझ नहीं पा रहे हैं।

इसलिए, प्रत्येक गृहस्थ को समय-समय पर शुक्र साधना अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि गृहस्थी का आधार है- प्रेम, सरसता, सामंजस्य और कामनाओं की निरंतर पूर्ति और शुक्र साधकों को ये सारे उपहार प्रदान करते हैं।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। मित्रों एवं सम्बंधियों से रिश्ते बनाकर रखें। अकारण यात्रा के योग बनेंगे। धन की हानि हो सकती है। मन में अशांति होगी। सप्ताहांत तक स्थितियों में सुधार।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। कार्य एवं पद में हानि हो सकती है। वाणी पर संयम रखें। भाग्य में वृद्धि होगी। घरेलू विवाद से बचें।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य में सुधार होगा। नवीन वस्त्रादि का सुख प्राप्त होगा। मन प्रसन्नचित होगा। बन्धुजनों से लाभ होंगे।भाग्य में वृद्धि होगी। पदोन्नति के लिए समय ठीक है। पिता से लाभ प्राप्त होंगे। शत्रुओं पर विजय।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - रोगमुक्त होंगे। गलत चरित्र के लोगों से दूरी बनाएं। कार्यों के सफलता में देर हो सकती है। धनागम के योग बनेंगे। शत्रुओं पर विजय।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्त्री से सम्बन्ध सुधरेंगे। मन प्रसन्न रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। मन में चंचलता रहेगी। उत्तम भोजन एवं वस्त्र सुख प्राप्त होंगे। भाइयों से रिश्ते बनाकर रखें लाभ होगा।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - बुरे कर्मों के फल प्राप्त होंगे। शरीर में पीड़ा होगी। बवासीर या अपच का शिकार हो सकते हैं। धन का अधिक खर्च होगा। शत्रुओं से झगड़े होंगे।। मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती है।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। व्यापार में अच्छा लाभ होगा। स्त्रीवर्ग से लाभ। तरल पदार्थों से लाभ होगा। उत्तम भोजन,वस्त्र और शय्या सुख की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - सुख आनन्द का अनुभव करेंगे। रोग मुक्त होंगे। स्वजनों से मनमुटाव होंगे। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। सप्ताहांत में थोडा मानसिक चिंता बढ़ सकती है।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। व्यवसाय में हानि हो सकती है। भाग्य साथ नही देंगे। सप्ताहांत तक अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। राज्याधिकारियों से वाद विवाद हो सकते हैं। स्त्री सुख मिलेगा।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - स्वास्थ्य अच्छा होगा। सभी कार्यों में सफलता मिल सकती है। उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे। मित्रों से सहायता मिलेगी। पदोन्नति होगी। व्यय अधिक हो सकते हैं।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पेट सम्बन्धी समस्या हो सकती है। शत्रु परेशान करेंगे। व्यवसाय में हानि हो सकती है।सप्ताह के मध्य में धन एवं सम्मान की प्राप्ति हो सकती है।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - स्वास्थ्य लाभ होगा। यश और आनन्द की प्राप्ति होगी। शत्रुओं की पराजय होगी। व्यय में अधिकता होगी। वाणिज्य व्यवसाय में लाभ हो सकता है। छोटी पर लाभ दायक यात्रा हो सकती है।

अधिक जानकारी के लिए
संपर्क करें– 7808820251

झारखण्ड पुलिस

बोकारो जिला

आवश्यक सूचना

एक करोड़ (1,00,00,000) वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

मिसिर बेसरा उर्फ भास्कर उर्फ सुनिर्मल जी उर्फ सागर पे0–दर्पण मांझी
सा0–मदनडीह
थाना–पीरटांड़
जिला–गिरिडीह
(PBM)

प्रयाग मांझी उर्फ विवेक उर्फ फूच्चु उर्फ करण दा उर्फ लेटरा,
पे0–स्व0 चरकु मुर्मू,
ग्राम–दल्लुबुद्धा,
थाना–टूण्डी,
जिला–धनबाद।
(CCM)

अनल दा उर्फ तुफान दा उर्फ पतिराम माँझी उर्फ पतिराम मराण्डी उर्फ रमेश
पे0–टोटो मराण्डी उर्फ तारू माँझी, सा0–झरहावाले,
थाना–पीरटाँड़ जिला–गिरीडीह
(CCM)

पच्चीस लाख (25,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

रघुनाथ हेम्ब्रम उर्फ निर्भय जी उर्फ बिरसेन उर्फ काना,
पे0–बिशु हेम्ब्रम,
ग्राम–जरीडीह,
थाना–डूमरी,
जिला–गिरीडीह
(SAC)

अजय महतो उर्फ टाईगर उर्फ मोछु उर्फ श्रीकान्त उर्फ अंजन
पे0–प्रेमचंद्र महतो
ग्राम–नावाडीह, थाना–पीरटाँड़,
जिला–गिरीडीह
(SAC)

प्रकाश महतो उर्फ अतुल उर्फ पिन्टु महतो पे0–केशव महतो
सा0–अमन बस्ती
थाना–गोमिया
जिला– बोकारो।
(SAC)

पन्द्रह लाख (15,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

दुर्योधन महतो उर्फ मिथिलेश सिंह उर्फ बड़ा बाबु उर्फ बड़का दा, पे0–लोचन महतो, ग्राम–गेन्द्र नागाडीह,
थाना–तोपचाँची, जिला–धनबाद।
(RCM)

संतोष महतो उर्फ संजय उर्फ बासुदेव महतो उर्फ बसवा, पे0–स्व0 माधो महतो उर्फ लोधा महतो,
ग्राम–गम्हारा, थाना–पीरटाँड़, जिला–गिरीडीह
(RCM)

रणविजय महतो उर्फ रंजय उर्फ नेपाल महतो,
पे0–हुबलाल महतो, ग्राम–बेहराटांड़ (नर्रा)
थाना–चन्द्रपुरा, जिला–बोकारो।
(RCM)

दो लाख (2,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

कुँवर माँझी उर्फ सहदेव माँझी उर्फ सादे,
पे0–करमा मांझी,
ग्राम–बिरहोरडेरा,
थाना–महुआटाँड़, जिला–बोकारो।
(AC)

एक लाख (1,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

ब्रजेश मांझी उर्फ बेगुला पे0–गेजुआ उर्फ गगरा,
ग्राम–डंडरा,
थाना – गोमिया (चतरोचट्टी)
जिला– बोकारो।
(LGS)

बिरसा मांझी पे0–स्व0 बुधू मांझी
सा0–चोरपनिया,
थाना–जगेश्वर बिहार,
जिला– बोकारो।
(LGS)

गौण हुआ गण, लचर यंत्र बना तंत्र

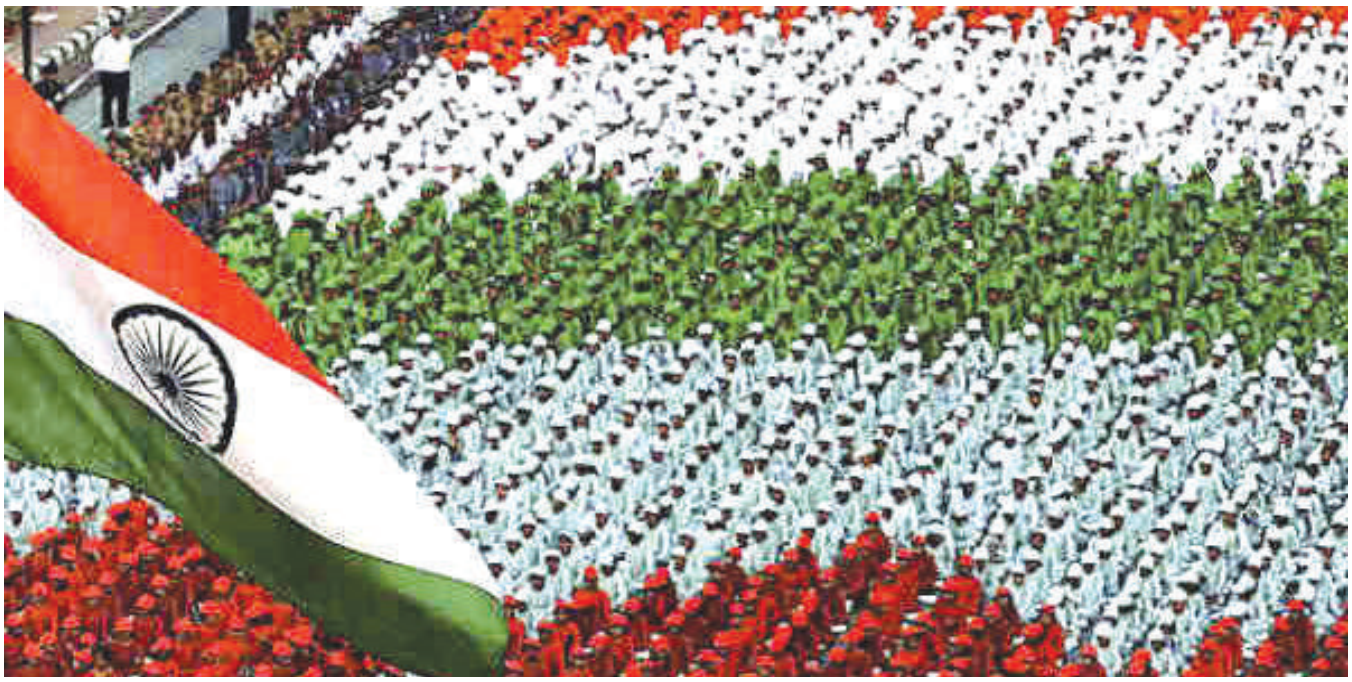

हमारा देश 74वां गणतंत्र दिवस मना रहा है, परंतु सच्चाई यह है कि जिस उम्मीद, जिस सोच और जिस सपने के साथ वर्ष 1952 में विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थापना की गयी थी, वह आज तक कहीं न कहीं अधूरा ही दिख रहा है। गण आज गौण और तंत्र मात्र कुछ खास लोगों के लिये अपनी स्वार्थपूर्ति का यंत्र बन गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह तंत्र आज चंद सफेदपोश और नौकरशाहों के हाथों की कठपुतली और गण (जनता) विवश हो मात्र तमाशबीन बनकर रह गया है। इसके मूल में प्रकाश डालें तो वर्तमान परिप्रेक्ष्य की गंदी राजनीति और हर जगह व्याप्त भ्रष्टाचार अहम कारण माना जा सकता है। सदियों की गुलामी के बाद जब आजादी मिली तो देशवासियों में अपना देश, अपना राज की एक आशा जगी, लेकिन वह आशा आजतक पूरी नहीं हो सकी है। आम आदमी तो आम, दिन-रात एक कर प्रतिकूलतम परिस्थितियों में सरहदों पर राष्ट्र-रक्षा में लगे जवान भी न्याय के लिये दर-दर की ठोकरें खाने को विवश हैं। कहने को तो है गणतंत्र, लेकिन चंद स्वार्थी लोगों ने इसे भ्रष्टतंत्र बनाकर छोड़ दिया। आज भी गरीबी और अमीरी की खाई देश में और गहरी ही होती जा रही है।

जहां एक तरफ हमारे देश के कुछ लोग विश्व के धनिकों की फेहरिस्त में शुमार होने का गौरव प्रदान करते हैं, वहीं आज भी ऐसे परिवारों की कमी नहीं हैं जहां दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती और वे भूख से दम तोड़ देते हैं। असंख्य ऐसे भारतवासी हैं, जिन्हें रोटी, कपड़ा और मकान, तीनों मूलभूत सुविधाएं सपने में भी मयस्सर नहीं हो पाती। बहुत से ऐसे लोग हैं जो पैसों की कमी में इलाज नहीं करा पाते और दम तोड़ देते हैं। बीमार होने पर डाक्टर मानवता नहीं, पहले पैसा देखते हैं। डाक्टर तो ऐसे-ऐसे हैं, जो मरने के बाद पैसे के अभाव में लाश तक को बंधक बना लेते हैं। यह मानवता को शर्मसार कर देने वाला है। खैर...। आज भी करोड़ों बेरोजगार पढ़-लिखकर या तो सड़कों की खाक छान रहे हैं या अपनी योग्यता से कहीं निचले स्तर की चाकरी करने को विवश हैं। इसके लिये हमारे तंत्र में अंग्रेज की मैकाले शिक्षा-पद्धति भी जिम्मेवार मानी जा सकती है। ऐसा नहीं है कि सरकारें कुछ नहीं करती। सरकार योजनायें तो बनाती हैं, परंतु उनका लाभ जरूरतमंदों से कहीं ज्यादा बिचौलियों को मिल जाता है और वह जरूरतमंद गण अपनी दुर्दशा में यथावत रह जाता है। सरकारें आती है, जाती हैं, परंतु अपने तंत्र की इस व्यवस्था में वह आमूल-चूल सुधार नहीं कर पाती। हमारे देश के सियासतदां ऐसे-ऐसे हैं, जो वोट की खातिर दुश्मन देश तक में जाकर रोना रोते हैं और कुछ ऐसे हैं, जिन्हें अपनी बेटी की इज्जत से प्यारी वोट नजर आती है। दुर्भाग्य है ऐसी राजनीति पर और लानत है ऐसे तथाकथित नेताओं पर। वोट की राजनीति हमारे देश में ऐसा सकारात्मक माहौल बनने ही नहीं देती कि देश में शासकों का नहीं, शासितों का राज हो, यानी गण का अपना तंत्र हो। ऊपर से वर्गविशेष का खास राजनीतिक लाभ लेने के लिये आरक्षण की दीवारें हर जगह खड़ी करना भी देश और देशवासियों के विकास का अहम अवरोधक माना जा सकता है।

कहने के लिए देश में लोकतंत्र का राज है पर आज भी चाहें छोटे शहर हों या फिर छोटे-छोटे गांव हर जगह सामंतवादी प्रवत्ति आज भी हावी है और सही मायने में लोकतंत्र कहीं दिखाई ही नहीं देता। देश में कई बड़े-बड़े आयोग बने हुए हैं, जो एयर कंडीशन दफ्तरों में बैठकर सिर्फ अपनी हाजिरी बजाकर अपनी ड्यूटी की इतिश्री समझ रहे हैं। वहीं, जिस पुलिस वाले को समाज व कानून का रक्षक बनाया गया है, वह वदीर्धारी गुंडा और दबंग के रूप में ही दिख रहा है। आलम यह है कि आज भी आम आदमी थाने का नाम सुनते ही घबरा जाता है। एक मामूली पुलिस वाले का रिश्तेदार और जान-पहचान वाला भी अपने-आप को कानून से ऊपर समझता है और जमकर कानून को हाथ में लेता है। यही कारण है कि कानून भी कई बार अंधा कानून बनकर सामने आता है और कई निर्दोष इस मकड़जाल में फंस जाते हैं।

हाल के दिनों में देश में भ्रष्टाचारियों पर नकेल जरूर कसी है, परंतु इस नकेल का दायरा और बढ़ाने की जरूरत है, ताकि अधिकाधिक लोगों को न्याय मिल सके और भ्रष्टतंत्र सही मायने में गणतंत्र के रूप में स्थापित हों। इसी प्रकार स्वार्थमात्र की राजनीति छोड़ देश तथा देशहित को प्राथमिकता देनी होगी, तभी देश का सही विकास होगा और यही देश के वीर बलिदानियों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ऐसा नहीं है कि गणतंत्र की आज की स्थिति के लिये सिर्फ और सिर्फ तंत्र ही दोषी है, जनता भी कहीं न कहीं अपनी जवाबदेही नहीं पूरी कर पा रही। खास तौर से जवाबदेह पदों पर बैठे लोगों को तो यह समझना ही चाहिये। वहीं आमलोगों को भी अपनी मनोवृत्ति में बदलाव लाते हुए देशप्रेम की सच्ची भावना जागृत करनी होगी। जो जिस जगह पर है, जहां है, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन जरूर करें। अपने अधिकारों व कर्तव्यों को समझना होगा। 26 जनवरी और 15 अगस्त जैसे अवसरों को छुट्टीमात्र का दिन समझ एकदिनी जश्न मनाना सही नहीं माना जा सकता। एक दिन के लिये ही जय-भारत, जय भारती का नारा क्यों, हमारा पल-पल, क्षण-क्षण जब राष्ट्र के प्रति समर्पित होगा, तो ही सही मायने में हम नेताजी सुभाष, चंद्रशेखर आजाद सरीखे वीर सपूतों के सपनों का भारत बना सकेंगे और सभी सच्चे गणतंत्र की स्थापना संभव हो सकेगी।

जय हिन्द!

- प्रस्तुति : आरके झा

वतन के वास्ते

- ऋतुराज वर्षा, रांची।

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना,
यही मकसद हमारा है,
यही मुकाम हमारा है।
हिंदवासियों तेरा हर काम प्यारा है।

आज साल नया है और
नया है हाल दिलों का।
मतलबी निगाहों से बचकर निकलना है,
रखना है सदा अपना ख्याल।
स्वतंत्रता, गणतंत्रता के जश्न का है माहौल।
जिगर में सबके देशभक्ति है हमें भरना।
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।

मुश्किलें जब भी आए हम हैं एक, आओ मिलकर दोहराएं।
चमन न होगा खाली एक-दूजे के बन जाएं।
फूल प्यार के,
फूल जज्बात के,
फूल देशभक्ति के
हर दुखी दिल में खिला जाएं।

मगरूर हो दुश्मन तो हमें क्या है लेना।
छाती चौड़ी करके हिंद की गाथा है गाना।
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।

सभी देशवासियों को
74वें गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!

अंशु कुमारी
मुखिया
पूर्वी ससबेड़ा, जिला- गोमिया (बोकारो)।

गोमिया की जनता सहित समस्त
भारतवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!

अनिल कुमार महतो
उप प्रमुख
गोमिया (बोकारो)।

ऐसी रही है हमारी गणतंत्र-यात्रा

26 जनवरी को हर साल हमलोग अपना गणतंत्र दिवस मनाते रहे हैं, लेकिन इसके पीछे कितने सफर तय किए गए हैं और क्या-क्या खास बातें रही हैं, आइए जानते हैं-

21 तोपों की सलामी के बाद भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने फहराकर 26 जनवरी 1950 को भारतीय गणतंत्र के ऐतिहासिक जन्म की घोषणा की। एक ब्रिटिश उप निवेश से एक संप्रभुतापूर्ण, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत का निर्माण एक ऐतिहासिक घटना रही। यह लगभग 2 दशक पुरानी यात्रा थी जो 1930 में एक सपने के रूप में संकल्पित की गई और 1950 में इसे साकार किया गया। भारतीय गणतंत्र की इस यात्रा पर एक नजर डालने से हमारे आयोजन और भी अधिक सार्थक हो जाते हैं।

गणतंत्र राष्ट्र के बीज 31 दिसंबर 1929 की मध्यरात्रि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर सत्र में बोए गए थे। यह सत्र पंडित जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था। उस बैठक में उपस्थित लोगों ने 26 जनवरी को ''स्वतंत्रता दिवस'' के रूप में अंकित करने की शपथ ली थी, ताकि ब्रिटिश-राज से पूर्ण स्वतंत्रता के सपने को साकार किया जा सके। लाहौर सत्र में नागरिक अवज्ञा आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया गया। यह निर्णय लिया गया कि 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वराज दिवस के रूप में मनाया जाएगा। पूरे भारत से अनेक भारतीय राजनैतिक दलों और भारतीय क्रांतिकारियों ने समान और गर्व सहित इस दिन को मनाने के प्रति एकता दर्शाई।

भारतीय संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को की गई, जिसका गठन भारतीय नेताओं और ब्रिटिश कैबिनेट मिशन के बीच हुई बातचीत के परिणामस्वरूप किया गया था। इस सभा का उद्देश्य भारत को एक संविधान प्रदान करना था जो दीर्घ अवधि प्रायोजन पूरे करेगा और इसलिए प्रस्तावित संविधान के विभिन्न पक्षों पर गहराई से अनुसंधान करने के लिए अनेक समितियों की नियुति की गई। सिफारिशों पर चर्चा, वाद-विवाद किया गया और भारतीय संविधान पर अंतिम रूप देने से पहले कई बार संशोधित किया गया तथा 3 वर्ष बाद 26 नवंबर 1949 को आधिकारिक रूप से अपनाया गया। जबकि, भारत 15 अगस्त 1947 को एक स्वतंत्र राष्ट्र बना, इसने स्वतंत्रता की सच्ची भावना का आनन्द 26 जनवरी 1950 को उठाया जब भारतीय संविधान प्रभावी हुआ। इस संविधान से भारत के नागरिकों को अपनी सरकार चुनकर स्वयं अपना शासन चलाने का अधिकार मिला।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने गवर्नमेंट हाउस के दरबार हाल में भारत के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली और इसके बाद राष्ट्रपति का काफिला 5 मील की दूरी पर स्थित इर्विन स्टेडियम पहुंचा, जहां उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। तब से ही इस ऐतिहासिक दिवस, 26 जनवरी को पूरे देश में एक त्यौहार की तरह और राष्ट्रीय भावना के साथ मनाया जाता है। इस दिन का अपना अलग महत्व है जब भारतीय संविधान को अपनाया गया था। इस गणतंत्र दिवस पर महान भारतीय संविधान को पढ़कर देखें जो उदार लोकतंत्र का परिचायक है, जो इसके भण्डार में निहित है।

क्या कहता है संविधान का आमुख

395 अनुच्छेदों और 8 अनुसूचियों के साथ भारतीय संविधान दुनिया में सबसे बड़ा लिखित संविधान है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति ने भारतीय गणतंत्र के जन्म के अवसर पर देश के नागरिकों का अपने विशेष संदेश में कहा- ''हमें स्वयं को आज के दिन एक शांतिपूर्ण, किंतु एक ऐसे सपने को साकार करने के प्रति पुनः समर्पित करना चाहिए, जिसने हमारे राष्ट्रपिता और स्वतंत्रता संग्राम के अनेक नेताओं और सैनिकों को अपने देश में एक वर्गहीन, सहकारी, मुक्त और प्रसन्नचित्त समाज की स्थापना के सपने को साकार करने की प्रेरणा दी। हमें इसे दिन यह याद रखना चाहिए कि आज का दिन आनन्द मनाने की तुलना में समर्पण का दिन है - श्रमिकों और कामगारों परिश्रमियों और विचारकों को पूरी तरह से स्वतंत्र, प्रसन्न और सांस्कृतिक बनाने के भव्य कार्य के प्रति समर्पण करने का दिन है। सी. राजगोपालाचारी, महामहिम, महाराज्यपाल ने 26 जनवरी 1950 को ऑल इंडिया रेडियो के दिल्ली स्टेशन से प्रसारित एक वार्ता में कहा - ''अपने कार्यालय में जाने की संध्या पर गणतंत्र के उद्घाटन के साथ मैं भारत के पुरुषों और महिलाओं को अपनी शुभकामनाएं और बधाई देता हूं जो अब से एक गणतंत्र के नागरिक है। मैं समाज के सभी वर्गों से मुझ पर बरसाए गए इस स्नेह के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं, जिससे मुझे कार्यालय में अपने कार्व्यों और परपराओं का निर्वाह करने की क्षमता मिली है, अन्यथा मैं इससे सर्वथा अपरिचित था।

आततायी भी घुटने टेक रहे

हैं हम ग्रंथ सनातन के, पवित्र पावन हमारी धारणा।
साहित्यकारों ने चाहा ग्रंथ द्वारा समाज को बांधना।।
हम भी चाहते बुद्धि से भटके हुए लोगों को उबारना।
हो समाज विकसित, यही सनातन धर्म की मंगलकामना।।

किन्तु कैसी हवा बही यह, अल्पज्ञानी बनने लगे महान।
ग्रंथों की बखिया उधेड़ रहे, बिन पढ़े रामायण पुराण।।
अपनी तुच्छता की पुष्टि को वे मानते अपना स्वाभिमान।
ऐसे पापियों से घायल होता आया अपना हिन्दुस्तान।।

'प्रात लेइ जो नाम हमारा, तादिन ताहि न मिलै अहारा'।
इस पंक्ति के मूल भाव को पढ़े बिना, किया इससे किनारा।।
लगाया मूढ़ ने केवल शंबूक, शबरी, केवट का नारा।
कुबोली से बनजाऊं मैं मसीहा, मन में किया विचारा।।

कबतक सनातनियों को सहना पड़ेगा जयचंदी विचार।
कबतक चलेगा दुष्ट जयचंदी की लोलुपता का अत्याचार।।
कबतक उगलेंगे जयचंदी, धर्म ग्रंथ जलाने का उद्गार।
कबतक मनाएंगे वे अपनी तुच्छ मानसिकता का त्योहार।।

मतकर बकबक, रे बड़बोले! नहीं है, यहां कोई निर्बल।
शांत हो बहुत सहे हमने फूट डालने का तेरा छल।।
आतातायी भी घुटने टेक रहे, देख एकता का बल।
जाग जनता, अब आत्मसात कर रही इतिहास का हर पल।।

जब लिखा गया ग्रंथ, उस समय था समाज को संभालना।
कर्म के अनुसार मानव को सामाजिक पद में ढालना।।
हैं हम ग्रंथ सनातन के, पवित्र पावन हमारी धारणा।
साहित्यकारों ने चाहा ग्रंथ द्वारा समाज को बांधना।।

- डॉ. सविता मिश्रा 'मागधी'
बेंगलुरू।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

दामोदर घाटी निगम
चंद्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र
दामोदर घाटी
राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित
दामोदर घाटी निगम
चंद्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र की ओर से गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
"हमसे है लाखों चेहरों पर मुस्कान"

चास-बोकारो के निवासियों सहित समस्त भारतवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!

योगेंद्र कुमार चौधरी
अध्यक्ष
धर्म जन-जागरण समिति

75 वर्षों से विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में देश की अग्रणी संस्था
"हमसे है लाखों चेहरों की मुस्कान"
दामोदर घाटी निगम के बोकारो थर्मल प्रतिष्ठान की ओर से बोकारो थर्मल वासियों, डीवीसी परिवार सहित सभी देश वासियों को आजादी का अमृत महोत्सव 74 वें गणतंत्र दिवस पर ढ़ेर सारी बधाई एवं
हार्दिक शुभकामनाएं।

सुशांत सन्निग्रही
परियोजना प्रधान सह मुख्य अभियंता
डीवीसी बोकारो थर्मल पावर प्लांट, बोकारो।

समस्त देशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
डॉ. प्रभाकर कुमार
बाल अधिकार कार्यकर्ता सह- मनोवैज्ञानिक, बोकारो (झारखंड)।

लोधी पंचायत की जनता सहित सभी देशवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

जुबैदा बानो
मुखिया
पंचायत लोधी गोमिया,
जिला- बोकारो।

गोमिया के निवासियों सहित सभी भारतवासियों को गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

प्रमिला चौड़े
प्रमुख
गोमिया
बोकारो, झारखंड।

हमारा लोकतंत्र, हमारी ताकत
बेरमो, बोकारो और झारखंड सहित समस्त देशवासियों को मेरी ओर से
74वें गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

मदन मोहन अग्रवाल
वरीय नेता, झामुमो
पूर्व अध्यक्ष, वन विकास निगम, बिहार-झारखंड।

समस्त देशवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

हर्षद दातार
महाप्रबंधक
कथारा (सीसीएल)।

समस्त देशवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

राजेश रंजन
थाना प्रभारी
गोमिया।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!

डॉ. धीरेन्द्र कुमार करमाली
भीष्म मेमोरियल नर्सिंग होम
तेनुघाट रोड,
गोमिया (बोकारो)।

गोमिया प्रखंड की जनता सहित सभी देशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!

कपिल कुमार महतो
प्रखंड विकास पदाधिकारी
गोमिया, बोकारो (झारखंड)।

समस्त देशवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

राजेश कुमार विश्वकर्मा
केंद्रीय सचिव, आजसू पार्टी
सह विधायक प्रतिनिधि, गोमिया।

सभी देशवासियों को गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएं!

मो. रियाज
मुखिया
चुट्टे, गोमिया (बोकारो)।

एक बजट, भारत के लिए

अभिव्यक्ति

- अनिल पद्मनाभन -
(स्वतंत्र पत्रकार)

इस साल का केंद्रीय बजट- भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की ओर से लगातार 11वां बजट- असाधारण परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में पेश किया जा रहा है। यह अगले साल होने वाले आम चुनाव से पहले का अंतिम नियमित बजट है, जो ऐसे दौर में पेश किया जा रहा है, जब एक अति-विभाजित दुनिया अभूतपूर्व आर्थिक चुनौती का सामना कर रही है, जिसे जलवायु परिवर्तन ने और भी जटिल बना दिया है।

2020 में कोविड-19 महामारी के आने के बाद से, दुनिया को अभूतपूर्व परिमाण की संभावनाओं वाले विभिन्न संकटों का सामना करना पड़ा है- रूस-यूक्रेन संघर्ष, इसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका के फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में बढ़ोतरी और हाल ही में चीन में कोविड-19 महामारी का तेजी से फैलना। महामारी, भू-राजनीतिक तनाव, वैश्विक स्तर पर नकदी में कमी और कमोडिटी की कीमतों के उतार-चढ़ाव के मिले-जुले प्रभाव ने सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका समेत पूरी दुनिया को खतरनाक रूप से मंदी के करीब ला दिया है।

हालांकि, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के लिए खुशी के कारण मौजूद हैं। 2022-23 में 6.5 से 7 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज करने के लिए तैयार अपनी अर्थव्यवस्था के साथ, भारत इस गंभीर वैश्विक धारणा को चुनौती देना जारी रखे हुए है। इससे भी अच्छी बात यह है कि वित्त मंत्री के पास इस तथ्य को मानने के पर्याप्त कारण हैं कि यह मुख्य रूप से 2014 में सत्ता में आने के बाद एनडीए द्वारा अपनाई गई नीतिगत कार्ययोजना का परिणाम है।

नयी कार्ययोजना

नौ साल पहले सत्ता में आने के बाद से, एनडीए ने भारतीय अर्थव्यवस्था को केन्द्रबिन्दु बनाने की कोशिश की है। वैश्विक निवेश बैंकों, विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा हाल ही में इन नीतिगत परिवर्तनों की सराहना और पुष्टि भी की गई है।

सबसे बड़े अप्रत्यक्ष कर सुधार

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी)- के लागू होने के साथ इसकी शुरूआत हुई, जिसने पहली बार देश को आर्थिक रूप से एकीकृत किया। जीएसटी सिद्धांत, 'एक राष्ट्र, एक टैक्स' ने विभिन्न मतभेदों को नाटकीय रूप से कम करके अर्थव्यवस्था को और अधिक कुशल बना दिया। आश्चर्य की बात नहीं है कि मासिक सकल जीएसटी संग्रह अब औसतन 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक है- नवंबर में सरकारी कोष में 1.45 लाख करोड़ रुपये जमा हुए हैं। निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने और इसे पुनर्जीवित करने के लिए केंद्र सरकार ने कॉरपोरेट टैक्स की दरों को मौजूदा 30 प्रतिशत से घटाकर 22 प्रतिशत कर दिया। इसके अलावा, सरकार ने 2019 के बाद निगमित कंपनियों के लिए 15 प्रतिशत की निम्न दर निर्धारित की। इस योजना को 2023 तक के लिए बढ़ा दिया गया है। इसी तरह, 2016 में दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) के पारित होने से वाणिज्यिक बैंकों के पुराने व अप्राप्य ऋणों को कम करने में मदद मिली। 2021-22 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, वित्तीय लेनदारों ने 30 सितंबर 2021 के अंत तक बैंकों के 7.94 लाख करोड़ रुपये के कर्ज में से 2.55 लाख करोड़ रुपये की वसूली की। वित्तीय क्षेत्र की इस व्यवस्था ने, जिसमें बैंक बैलेंस शीट का पूंजीकरण भी शामिल था, वाणिज्यिक बैंकों की उधार देने की क्षमता को बहाल किया।

निजीकरण की नीति को औपचारिक रूप देने के बाद, एनडीए ने एक प्रमुख वैचारिक बदलाव भी किया। इसका सबसे ताजा उदाहरण टाटा समूह को एयर इंडिया की बिक्री है। इसके साथ ही केंद्र सरकार ने बड़े पैमाने की ग्रीनफील्ड अवसंरचना परियोजनाओं के लिए धन अर्जित करने हेतु सार्वजनिक क्षेत्र के स्वामित्व वाली निष्क्रिय संपत्तियों के मुद्रीकरण के लिए कदम उठाये हैं- अंतर्निहित रणनीति, निजी निवेश के लिए धन-अर्जन पर आधारित है। राजकोषीय विवेक, वित्तीय संसाधनों को खोलना और कर संग्रह में वृद्धि आदि ने वित्त मंत्री को अवसंरचना परियोजनाओं और कोविड-19 राहत पैकेजों को वित्तपोषित करने के लिए साधन प्रदान किए हैं।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन संरचनात्मक सुधारों ने आर्थिक दक्षता में सुधार किया है, वे महामारी के कारण हुई आर्थिक तबाही के खिलाफ स्पष्ट रूप से एक अतिरिक्त उपाय साबित हुए हैं।

डिजिटल जनकल्याण

पिछले एक दशक में आधार, एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई), कोविन, डिजिटल वाणिज्य के लिए ओपन नेटवर्क (ओएनडीसी), खातों को जोड़ना, स्वास्थ्य योजनायें और ऋण को सक्षम करने के लिए ओपन नेटवर्क (ओसीईएन) जैसी डिजिटल जनकल्याण (डीपीजी) योजनाओं की तेजी से शुरूआत से भी भारतीय अर्थव्यवस्था को अप्रत्याशित बढ़ावा मिला है।

इन डिजिटल जनकल्याण (डीपीजी) योजनाओं को एक ओपन डिजिटल इकोसिस्टम में तैयार किया गया है, जो भुगतान, स्वास्थ्य देखभाल आदि में नवाचार के लिए निजी क्षेत्र को इन डिजिटल माध्यमों का उपयोग करने में सक्षम बनाता है। इसी के साथ, शुरूआत करने की लागत को बहुत कम करके, इन डीपीजी ने अर्थव्यवस्था को औपचारिक बनाने को गति दी तथा पहचान, कोविड-19 टीकाकरण, भुगतान, ऋण और हाल ही में ई-कॉमर्स तक पहुंच का लोकतंत्रीकरण किया।

इन सार्वजनिक डिजिटल माध्यमों का उपयोग केंद्र सरकार द्वारा प्रत्यक्ष लाभ अंतरण को गति देने के लिए भी किया गया है, जिसका मूल्य कुल मिलाकर 25 लाख करोड़ रुपये से अधिक होने का अनुमान है। प्रत्यक्ष लाभ को सीधे तौर पर हस्तांतरित करने से सरकारी कोष की हानि (लीकेज) को रोकने में भी सफलता मिली है तथा 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बचत हुई है।

इसके अलावा, ये लाभार्थी भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख हितधारक बन गए हैं, जिसे वे पहले बाहर से देख रहे थे।

महामारी संकट

कोविड-19 महामारी की शुरूआत तथा इसके कारण हुए अर्थव्यवस्था के लॉकडाउन ने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में जीवन और आजीविका दोनों के लिए भारी संकट पैदा कर दिया। हालांकि अन्य देशों के विपरीत, भारत ने अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए राजकोषीय प्रोत्साहन के विकल्प का चयन नहीं किया। इसके बजाय, देश ने एक सोची-समझी रणनीति अपनाई, जिसमें शुरूआत में जीवन बचाने पर और फिर धीरे-धीरे आजीविका पर ध्यान केंद्रित किया गया- 80 करोड़ लोगों के लिए निःशुल्क खाद्यान्न योजना शुरू करके कमजोर वर्गों के भौतिक आधार को मजबूती दी गयी। इस योजना को अब दिसंबर 2023 तक के लिए बढ़ा दिया गया है।

सभी के लिए बिजली, पेयजल, स्वच्छता और आवास प्रदान करने के बड़े प्रोत्साहन के साथ, निःशुल्क खाद्यान्न योजना का यह असाधारण सामाजिक सुरक्षा कवच; सामाजिक संरचना के निचले हिस्से की आबादी के नुकसान को कम करने में सफल रहा। संरचनात्मक सुधारों ने अर्थव्यवस्था को और अधिक कुशल बना दिया है।

व्यापक प्रभाव का स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ना अभी शेष है, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था, खराब ऋणों की अभूतपूर्व वृद्धि से बैंकिंग क्षेत्र को हुई क्षति की भरपाई करने में जुटी थी। इसके अलावा, महामारी के साथ शुरू हुए एक के बाद एक संकटों ने सुधार प्रक्रिया को धीमा कर दिया। हालांकि, अर्थव्यवस्था को कमजोर करने वाले इन संकटों के समाप्त होने के साथ ही, देश की अर्थव्यवस्था फिर से पटरी पर लौटने के लिए तैयार है। यह परिस्थिति, इस साल के बजट के लिए एक स्वस्थ पृष्ठभूमि प्रदान करती है वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल में लघु वन पदार्थ हैं
वन में उनके वृहद् अर्थ हैं
जड़, पत्ते, फल-फूल, कन्द हैं
गोंद, छाल, मधु और सुगंध हैं
अनगिन चीजें जंगल देता
भरता है दुनिया का हर
भंडार...जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल तो सबका संबल है
सभी समस्याओं का हल है
वन ना करे किसी से आस
सब जोवों का पर्यावास
लेता ना, जंगल अयाचि है
देना ही सर्वश्रेष्ठ व्यवहार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

प्रगति का पथप्रदर्शक 'संविधान'

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि भारतीय संविधान में निहित आदर्शों ने देश का मार्गदर्शन किया है और इससे गरीबी और अशिक्षा की स्थिति से निकलकर देश अब आत्मनिर्भर राष्ट्र बनकर खड़ा है। श्रीमती मूर्मू ने 74वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम अपने परंपरागत संबोधन में कहा,'संविधान में निहित आदर्शों ने निरंतर हमारे गणतंत्र को राह दिखाई है। इस अवधि के दौरान, भारत एक गरीब और निरक्षर राष्ट्र की स्थिति से आगे बढ़ते हुए विश्व-मंच पर एक आत्मविश्वास से भरे राष्ट्र का स्थान ले चुका है। संविधान निर्माताओं की सामूहिक बुद्धिमत्ता से मिले मार्गदर्शन के बिना यह प्रगति संभव नहीं थी।' राष्ट्रपति ने कहा, 'बाबासाहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर और अन्य विभूतियों ने हमें एक मानचित्र तथा एक नैतिक आधार प्रदान किया। उस राह पर चलने की जिम्मेदारी हम सब की है। हम काफी हद तक उनकी उम्मीदों पर खरे उतरे भी हैं, लेकिन हम यह महसूस करते हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 'सर्वोदय' के आदर्शों को प्राप्त करना अर्थात सभी का उत्थान किया जाना अभी बाकी है। फिर भी, हमने सभी क्षेत्रों में उत्साहजनक प्रगति हासिल की है।' श्रीमती मुर्मू ने भारत की आर्थिक क्षेत्र की प्रगति को उत्साहजनक बताया और कहा, ''सर्वोदय के हमारे मिशन में आर्थिक मंच पर हुई प्रगति सबसे अधिक उत्साहजनक रही है। पिछले साल भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया।''

उन्होंने कहा कि भारत ने यह उपलब्धि कोविड-19 महामारी के प्रभावों के बीच आर्थिक अनिश्चितता से भरी वैश्विक पृष्ठभूमि में प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि वैश्विक महामारी चौथे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है और दुनिया के अधिकांश हिस्सों में आर्थिक विकास पर, इसका प्रभाव पड़ रहा है। शुरुआती दौर में कोविड-19 से भारत की अर्थव्यवस्था को भी काफी क्षति पहुंची। राष्ट्रपति ने कहा, ''भारतीय अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्र अब महामारी के प्रभाव से बाहर आ गए हैं। भारत सबसे तेजी से बढ़ती हुई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।'' उन्होंने कहा कि यह सरकार द्वारा समय पर किए गए सक्रिय प्रयासों द्वारा ही संभव हो पाया है। इस संदर्भ में 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के प्रति जनसामान्य के बीच विशेष उत्साह देखा जा रहा है। इसके अलावा, विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू की गई हैं। राष्ट्रपति ने हाशिए पर रह रहे लोगों के कल्याण के लिए योजनाओं और कार्यक्रमों को समावेशी बनाए जाने पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि कठिनाई के दौर में ऐसे लोगों की मदद की गई है। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि मार्च 2020 में घोषित 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' पर अमल करते हुए सरकार ने उस समय गरीब परिवारों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जब हमारे देशवासी कोविड-19 की महामारी के कारण अकस्मात उत्पन्न हुए आर्थिक व्यवधान का सामना कर रहे थे। इस सहायता की वजह से किसी को भी खाली पेट नहीं सोना पड़ा।

उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि गरीब परिवारों के हित को सर्वोपरि रखते हुए इस योजना की अवधि को बार-बार बढ़ाया गया तथा लगभग 81 करोड़ देशवासी लाभान्वित होते रहे। इस सहायता को आगे बढ़ाते हुए सरकार ने घोषणा की है कि वर्ष 2023 के दौरान भी लाभार्थियों को उनका मासिक राशन मुफ्त में मिलेगा। श्रीमती मुर्मू ने कहा, ''इस ऐतिहासिक कदम से, सरकार ने, कमजोर वर्गों को आर्थिक विकास में शामिल करने के साथ-साथ, उनकी देखभाल की जिम्मेदारी भी ली है।''

उन्होंने कहा, ''हमारा अंतिम लक्ष्य एक ऐसा वातावरण बनाना है जिससे सभी नागरिक व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, अपनी वास्तविक क्षमताओं का पूरा उपयोग करें और उनका जीवन फले-फूले।'' राष्ट्रपति ने कहा कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा ही आधारशिला तैयार करती है, इसलिए 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' में महत्वाकांक्षी परिवर्तन किए गए हैं। शिक्षा के दो प्रमुख उद्देश्य कहे जा सकते हैं। पहला, आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण और दूसरा, सत्य की खोज।